ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५८ अंक - १३ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जुलाई (प्रथम) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

एक प्रति का मूल्य १५ (पन्द्रह) रुपए

आर्य वीरांगना दल शिविर की झलकियाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : १३

दयानन्दाब्द: १९२

विक्रम संवत्: आषाढ़ कृष्ण, २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.। **एक प्रति का मूल्य** - पाउण्ड-३ **एक प्रति का मूल्य** - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जुलाई प्रथम २०१६

अनुक्रम

१. क्या शंकराचार्य को राष्ट्रीय दार्शनिक...	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. अनुसारक: भाषाई समस्याओं से....	अक्षर भारती, सुखदा	१३
४. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		१५
५. पुस्तक परिचय	देवमुनि	१६
६. मेरी अमेरिका यात्रा	डॉ. धर्मवीर	१७
७. भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के....	ब्र. सत्यव्रत	२२
८. आर्य वीर दल शिविर का सफल संचालन		२८
९. संस्था-समाचार		३२
१०. जिज्ञासा समाधान-११४	आचार्य सोमदेव	३७
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३७		४०
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

क्या शंकराचार्य को राष्ट्रीय दार्शनिक घोषित करना उचित होगा?

बुधवार ११ मई को आदि शंकराचार्य की जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर संघ के वरिष्ठ सदस्य एवं विचारक पी. परमेश्वरन द्वारा स्थापित स्वयंसेवी संस्था (एन.जी.ओ.) नवोदयम् तथा फेथ फाउण्डेशन ने सरकार से माँग की है कि आदि शंकराचार्य के जन्मदिन को राष्ट्रीय दार्शनिक दिवस के रूप में मनाया जाय। इस अवसर पर केन्द्रीय संस्कृति राज्य मन्त्री महेश शर्मा ने बताया कि सरकार इस प्रकार के प्रस्ताव पर विचार कर रही है।

इस समारोह में बताया गया कि संघ के संयुक्त महासचिव को भाजपा से वार्ता करने के लिये अधिकृत किया गया है। समारोह में अखिल भारतीय सह प्रचारक जे. नन्दकुमार एवं अनेक प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। अनेक वक्ताओं ने शंकराचार्य के दर्शन को शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की माँग की। संघ के विचारक पी. परमेश्वरन का नाम पढ़कर मुझे एक प्रसंग स्मरण हो आया। कुछ वर्ष पूर्व मुझे केरल यात्रा के प्रसंग में उनसे भेंट करने का और वार्तालाप करने का अवसर मिला था। उन्होंने उदारतापूर्वक दो घण्टे तक वार्ता की। मुझे आश्चर्य हुआ, जब मुझे उनके विचार सुनने को मिले। उस समय तक वे आर्य द्रविड़ सिद्धान्त को उचित मानते थे, आज इस विषय में उनके विचारों में परिवर्तन आ गया हो तो प्रसन्नता की बात है। दूसरी बात, ईश्वर को एक और निराकार मानना कैसे सम्भव है? उनके विचार से भारत में जितने मत-सम्प्रदाय और विचार हैं, उनमें सबके अपने ईश्वर हैं और सभी ठीक हैं। यह हिन्दू सम्प्रदाय की विशेषता है। परमेश्वरन इसको ठीक मानते हैं, परन्तु सिद्धान्त इसे मिथ्या कहता है। परमेश्वरन से जुड़ा एक प्रसंग और है। उन्होंने पणजी में एक शोध-संस्थान बनाया। इसे केरल की कम्युनिस्ट सरकार ने मान्यता देने से मना कर दिया, तो राजस्थान की भाजपा सरकार ने उस संस्थान को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर से मान्यता दिला दी।

जब तक कांग्रेस की सरकार थी, ईसाई-मुसलमानों की मौज थी। श्रीमती सोनिया गाँधी ने अल्पसंख्यक सुरक्षा विधेयक के माध्यम से अपना उद्देश्य और विचार प्रकाशित कर दिया था। यदि बिल संसद में पारित हो जाता तो यह भारत हिन्दुओं का न होकर, आधा इस्लाम और आधा ईसाइयों का हो जाता। सम्भवतः परमेश्वर को ऐसा स्वीकार नहीं था, अतः भारतीयता की प्राप्त आसन्न मृत्यु होते-होते बच गई। आज से पहले हिन्दुत्व के नाम पर किसी बात की माँग करना तुच्छ और आधुनिक युग में निन्दनीय माना जाता था, इस चुनाव ने नरेन्द्र मोदी को विजयी बनाकर हिन्दुत्व को समाप्त होने से बचा लिया। यह तो इतिहास की गौरवपूर्ण घटना रही।

अब हिन्दुत्व को स्वाभाविक रूप से अपने स्वरूप को प्रकाशित करने का अवसर है। यदि हिन्दुत्व में प्रचलित धारणाएँ सत्य और हितकर होतीं, तो उनकी पुनः स्थापना करने में कोई बुराई नहीं थी। हिन्दुत्व इस देश का दुर्भाग्य रहा है। हिन्दुत्व के नाम पर जो पाखण्ड, अज्ञान, शोषण और कायरता इस देश में फैली है, वही इस देश में दासता का कारण है। क्या हिन्दुत्व के नाम पर उन्हीं सब बातों को महिमा-मण्डित करना उचित होगा? हमारा विचार है कि पाखण्ड, अज्ञान, अन्याय एवं पक्षपातपूर्ण व्यवहार को हिन्दुत्व के नाम पर न कभी स्वीकार किया जा सकता है, न ऐसे विचार का समर्थन किया जा सकता है, फिर वह विचार चाहे सरकार का हो या किसी नेता, मन्त्री का।

आज ऐसे विचार और ऐसी माँगों की बाढ़ आ गई है। ऐसा लगता है कि हिन्दुत्व के नाम पर प्रचलित प्रत्येक मूर्खता, सत्ता से मान्य कराने की स्पर्धा प्रारम्भ हो गई है। गंगा या क्षिप्रा में स्नान करने के धार्मिक, सामाजिक एवं वैयक्तिक लाभ हो सकते हैं, परन्तु यह कहना कि गंगा में स्नान करने से मुक्ति मिलती है, यह पहले भी पाखण्ड था और आज भी पाखण्ड है। इसको कौन कह रहा है- इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।

आज समाचार पत्रों में 'शंकराचार्य को राष्ट्रीय दार्शनिक' घोषित करने की सरकार की योजना है। ये विचार भी पाखण्ड पूर्ण हिन्दुत्व का ही परिणाम है। आचार्य शंकर अपने समय के अद्वितीय दार्शनिक ब्राह्मणधर्म के पुनरुद्धारक रहे हैं। जिस समय यह सारा देश जैन और बौद्ध मान्यताओं का शिकार हो गया था, वेद का पठन-पाठन समाप्त प्रायः था, वैदिक धर्म का लोप था, उस समय सारे मत-मतान्तरों के आचार्यों को शंकर ने शास्त्रार्थ में पराजित् करके सभी राजाओं, विद्वानों को वैदिक धर्म का अनुयायी बनाया था। देश के चार कोनों में शंकराचार्य ने पीठों की स्थापना करके सारे देश को अपना अनुयायी बना लिया था।

आचार्य शंकर के महत्त्व को स्थापित करने वाली एक घटना आज भी स्मृति पटल पर अंकित है। गुरुकुल ज्वालापुर के स्नातक और निरुक्त के हिन्दी भाष्यकार पं. भगीरथ शास्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के उपाध्याय थे। वे सेवानिवृत्त होकर अपने गाँव लौटने लगे, तब अपने पुराने शिष्य डॉ. रामवीर शास्त्री से मिलने श्रद्धानिकुञ्ज स्थित हमारी कुटिया में पधारे, उस समय हम कुटिया में तीन छात्र रहते थे- डॉ. रामवीर, डॉ. सुरेन्द्र- वर्तमान कुलपति गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय तथा इन पंक्तियों का लेखक। बहुत समय अपने मधुर उपदेशों का वे हमें पान कराते रहे। आशीर्वाद देकर जाने लगे। बीस कदम गये, लौटे तो हम लोगों ने सोचा कि गुरुजी कोई वस्तु भूल गये हैं, लेने आये हैं। वे आये तो कहने लगे- मैं एक बात तो कहना भूल ही गया। हमने उत्सुकता से पूछा- बताइये। वे बोले- देखो, यदि पाण्डित्य क्या होता है- यह जानना हो तो आचार्य शंकर को पढ़ना, भाषा क्या होती है, उस पर अधिकार कैसा होता है- यह जानना हो तो आचार्य पतञ्जलि का महाभाष्य पढ़ना और विषय की व्यापकता जाननी हो तो व्यास रचित महाभारत पढ़ना, बस यही कहने आया था। गुरुजी का विद्या-प्रेम देखकर हम गद्‌गद् हो गये।

इसी प्रकार एक बार आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान्, उच्च वैज्ञानिक डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश जी के साथ ऋषि उद्यान अजमेर में घूमते हुए आचार्य शंकर के पाण्डित्य पर चर्चा चल रही थी। स्वामी जी कहने लगे- आचार्य शंकर स्वयं इतने विद्वान् थे कि वे चाहते तो अपना नया दर्शन बना सकते थे। स्वामी जी से मैंने पूछा- फिर उन्होंने बनाया क्यों नहीं? तब स्वामी जी ने उत्तर दिया- यदि वे अपना दर्शन बनाते तो उसे पढ़ता कौन? किसी भी नई वस्तु को स्थापित होने में सैंकड़ों वर्ष लगते हैं। आचार्य शंकर ने सरल मार्ग अपनाया। जो दर्शन समाज में प्रचलित था, उसी का अर्थ अपने अनुसार करने का प्रयास किया और उन्होंने उसे शिष्यों में प्रचारित किया। भले ही वह सर्वमान्य नहीं हुआ, परन्तु आज सारे दर्शन की बात करने वाले शंकर का नाम लेकर ही वेदान्त की बात करते हैं। यह आचार्य शंकर का वेदान्त सूत्रों के साथ बलात्कार है। जो बात सूत्र में है ही नहीं, आचार्य शंकर उन सूत्रों की व्याख्या में निकलते हैं। यह उनकी योग्यता या पाण्डित्य हो सकता है, औचित्य नहीं।

वर्तमान युग के दर्शनों के व्याख्याकार आचार्य उदयवीर जी ने वेदान्त दर्शन की व्याख्या करते हुए आचार्य शंकर के अद्वैत पर टिप्पणी करते हुये लिखा है- आचार्य शंकर का अद्वैत, वेदान्त दर्शन से वही सम्बन्ध रखता है, जैसे दुकान और मकान में 'कान' के होने का कोई निषेध नहीं कर सकता, परन्तु 'कान' का दुकान, मकान से कोई सम्बन्ध नहीं है।

ऋषि दयानन्द यद्यपि आचार्य शंकर के सिद्धान्तों का खण्डन करते हैं, परन्तु उनकी विद्वत्ता और कार्य की प्रशंसा करते हुए कहते हैं- यदि आचार्य शंकर ने ये सिद्धान्त बौद्धों के खण्डन के लिये स्वीकार किये हैं, तो तात्कालिक उपयोग के लिये हो सकते हैं, परन्तु सत्य के विपरीत हैं।

आचार्य शंकर बड़े पण्डित और धर्म संस्थापक रहे हैं, परन्तु क्या उन्हें राष्ट्रीय दार्शनिक घोषित किया जाना उचित होगा? आचार्य शंकर की भाँति अनेक आचार्यों ने वेदान्त पर अपनी-अपनी व्याख्या लिखी, शंकर की व्याख्या प्रचलित अधिक होगी, परन्तु सर्वमान्य नहीं रही है, अतः ऐसे में लोगों के बीच में उच्चता की स्थापना न्याय संगत नहीं है।

आचार्य शंकर मौलिक दर्शनकार की योग्यता रखते हैं, परन्तु मौलिक दर्शनकार नहीं हैं। उन्होंने वेदान्त सूत्रों पर अपना भाष्य किया नहीं, थोपा है। यह मूल शास्त्र और शास्त्रकार के साथ अन्याय है।

जब भी सूत्रों और उपनिषदों की प्रसंगों की व्याख्या करनी होती है, आचार्य शंकर उन शब्दों, वाक्यों का सहज संगत अर्थ छोड़कर- **इसका अभिप्राय यह है- कहकर अपनी बात वहाँ स्थापित करते हैं। जैसे अर्थ तो निकल रहा है, यह जीवात्मा का स्वरूप है तो अर्थ कहते हुए बतायेंगे- अखण्ड अद्वैत ब्रह्म के अंश का कथन है।** अर्थ तो निकला घोड़ा आ रहा है, आचार्य शंकर कहेंगे- इसका अभिप्राय ऊँट आ रहा है।

आचार्य शंकर ब्राह्मण धर्म के संस्थापक थे, परन्तु ब्राह्मण धर्म की कुरीतियों का उन्होंने खण्डन नहीं किया, अपितु स्पष्ट रूप से उनका समर्थन किया है। उनका सिद्धान्त उस काल की प्रचलित परम्परा होने पर भी स्वीकार्य नहीं हो सकता, आचार्य शंकर कहते हैं- **द्वारं किमेकं नरकस्य नारी।** नरक का एक मात्र द्वार नारी है। क्या इस कथन को आज स्वीकार किया जा सकता है? यदि पुरुष की दृष्टि में नारी नरक का द्वार है तो नारी की दृष्टि में पुरुष नरक का द्वार क्यों नहीं? राष्ट्रीय दार्शनिक की इस मान्यता को आज कोई स्वीकार कर सकता है?

इतना ही नहीं, आचार्य शंकर कितने भी महान् दार्शनिक हों, क्या सूत्रकार के स्थान पर भाष्यकार को श्रेष्ठता दी जा सकती है? राष्ट्रीय दार्शनिक ही बनाना है, तो सूत्रकारों की बड़ी लम्बी परम्परा है। यह दुर्भाग्य ही होगा कि वेदान्त के सूत्रकार महर्षि व्यास के स्थान पर वेदान्त सूत्रों की व्याख्या करने वाले को राष्ट्रीय दार्शनिक का स्थान दिया जा रहा है। इसे कौन न्याय संगत बतायेगा?

यह हमारे पौराणिक भाइयों का स्वभाव बन गया है- मूल शुद्ध स्वरूप को छोड़कर अशुद्ध स्वरूप को गौरवान्वित करने की उनकी परम्परा है। वेद दर्शन छोड़कर, वे पुराणों को वेद से ऊपर रखने का प्रयास करते हैं। इनके लिये सूत्रकार पाणिनि से

महान् कौमुदीकार भट्टोजी दीक्षित हैं। वही स्थिति है वेदान्त के सूत्रकार से बड़ा इनकी दृष्टि में भाष्यकार है।

सारे अद्वैत के आधारभूत वाक्य हैं -

प्रज्ञानं ब्रह्म। - ऐतरेय उपनिषद्/३/५/३

अहं ब्रह्मास्मि। - बृहदारण्यक/१/४/१०

तत्त्वमसि। - छान्दोग्य ६/८/७

अयमात्मा ब्रह्म। - माण्डूक्य २

इन उपनिषद् वाक्यों को महावाक्य और वेद-वाक्य कहा जाता है।

इस सारे कथन में परस्पर विरोध है। प्रथम, उपनिषद् को एक ओर वेद कहा जा रहा है, दूसरी ओर वेद मन्त्रों को ब्राह्मणेतर से दूर रखने के लिये उनको उद्धृत करने से बचा जा रहा है

आचार्य शंकर ने अपने ग्रन्थों को 'श्रुति' कहकर केवल उपनिषद् वाक्यों को ही उद्धृत किया, कहीं भी वेद मन्त्र का उल्लेख प्रमाण के लिये नहीं किया।

इसलिये ऋषि दयानन्द लिखते हैं- ये वेद वाक्य नहीं हैं, किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों के वचन हैं और इनका नाम 'महावाक्य' कहीं सत्य शास्त्रों में नहीं लिखा। इन वाक्यों की दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जब चार वाक्य चार भिन्न-भिन्न ग्रन्थों से प्रसंग से हटकर लिये गये हैं, तब एक ग्रन्थ का ब्रह्म पद दूसरे ग्रन्थ के तत् का अर्थ कैसे बन सकता है? यहाँ किसी भी तरह से ब्रह्म पद की अनुवृत्ति नहीं आ सकती। इस पर ऋषि दयानन्द ने लिखा है- तुमने इस छान्दोग्य उपनिषद् का दर्शन भी नहीं किया, जो वह देखो होती तो ऐसा झूठ क्यों कहते? वहाँ ब्रह्म शब्द का पाठ नहीं है। - सत्यार्थ प्रकाश पृ. २२४

आचार्य शंकर अद्वैत के बहाने शेष पाँचों दर्शनों का विरोध करते हैं, क्या यह मान्य किया जा सकता है?

शंकर परा पूजा में मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं, दूसरी ओर 'भज गोविन्दम्' का पाठ करते हैं। कौन-सा सिद्धान्त मान्य होगा?

इससे भी आगे आचार्य शंकर उस क्रूर और पाखण्डपूर्ण हिन्दुत्व के समर्थक हैं, जिसके अनुसार स्त्री-शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। आचार्य शंकर ने अपने वेदान्त दर्शन के भाष्य में पहले अध्याय के तीसरे पाद में वेद पढ़ने के अधिकार के लिये **इति ऐतिह्यं**= ऐसा पारम्परिक कथन है, कहकर पंक्तियाँ लिखीं है- **जिह्वाच्छेद।**

यदि **स्त्री और शूद्र वेद मन्त्र सुनें तो उनके कान में सीसा गर्म करके डाल देना चाहिए। यदि मन्त्र बोले तो जिह्वा छेदन कर देना चाहिए और वेद स्मरण करे तो शरीर भेद कर देना चाहिए। क्या पौराणिक लोग शंकर के इस कथन को राष्ट्रीय आदर्श घोषित कराना पसन्द करेंगे?**

स्वामी ब्रह्ममुनि अपने वेदान्त दर्शन के भाष्य में प्रथम अध्याय के तृतीय पाद के ३८वें सूत्र की व्याख्या में आचार्य शंकर के विषय में लिखते हैं-

यहाँ शाङ्करभाष्य में वेद का श्रवण करते हुए शूद्र के कानों को गर्म सीसे, धातु और लाख से भरना, वेद का उच्चारण करते हुए का जिह्वाछेदन करना, वेद का स्मरण कर लेने पर शिर काट देने का प्रतिपादन और उसका स्वीकार शङ्कराचार्य के द्वारा करना महान् आश्चर्य और अनर्थ की बात है। साथ ही इसको स्वीकार करने से भी बड़ी बात यह कि '**अहं ब्रह्मास्मि**' = मैं ब्रह्म हूँ, जीव ब्रह्म की एकता के वाद का स्वीकार और प्रचार करने वाला व्यक्ति इस प्रकार के निर्दय कृत्य को उचित मानता है और सूत्रकार व्यास मुनि का सिद्धान्त है- ऐसा प्रतिपादन करके सूत्रकार को भी कलङ्कित करता है। यह ऐसा शिष्टाचार शिष्ट ऋषि-मुनियों का आचार नहीं जो कि यहाँ शङ्कराचार्य ने दिखलाया। यह तो शिष्टविरुद्ध और वेदविरुद्ध है।

हिन्दुत्व का अभिप्राय अन्याय, पाखण्ड और अन्ध-परम्परा नहीं है, आपने इसी अन्धी चाल के चलते श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे क्रान्तिकारी की स्मृति में गुजरात में संग्रहालय तो बना दिया पर उसमें बड़े चित्र, काष्ठ मूर्तियाँ विवेकानन्द की लगा दीं, क्यों? कोई बता सकता है कि स्वामी विवेकानन्द और श्याम जी कृष्ण वर्मा के कार्य में कोई सामञ्जस्य है? **स्वामी विवेकानन्द ने अपने पूरे जीवन में राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिये कोई कार्य किया है? जीवन में कभी अंग्रेज सरकार का विरोध किया है? किसी क्रान्तिकारी के लिये सहानुभूति या समर्थन में दो शब्द कहे हैं, तो उन्हें अवश्य संग्रहालय दीर्घा में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिए, अन्यथा तो राष्ट्रीय दार्शनिक उपाधि भी आचार्य शंकर के स्थान पर स्वामी विवेकानन्द को ही दे दें, तो अच्छा होगा, फिर बिरयानी और अद्वैत के मेल से अच्छा वेदान्त बनेगा।** यदि किसी गौरव को स्थापित करना है तो वेद शास्त्र की और प्राचीन ऋषियों, आचार्यों की सुदीर्घ परम्परा है, उनको स्मरण करने की आवश्यकता है। ऐसा करने से भारत का गौरव बढ़ेगा और नई युवा पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी। आप सत्ता के सहारे मूर्खता को स्थापित करेंगे तो जो परिणाम पहले हुआ, वही फिर होगा। इसी अज्ञान से देश दासता को प्राप्त हुआ था, फिर भी वैसा ही होगा। यही कहना उचित होगा-

तातस्य कूपोऽमिति ब्रुवाणा
क्षारं जलं का पुरुषा पिबन्ति।।

- धर्मवीर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

तुम्हें याद हो कि न याद हो:- आर्य समाज को याद हो, कि न याद हो यह सेवक गत आधी शताब्दी से यह याद दिलाता आ रहा है कि उर्दू साहित्य के एक मूर्धन्य कवि श्री दुर्गासहाय सरूर आर्यसमाज जहानाबाद के मन्त्री थे। आपके गीतों को गाते-गाते देश सेवक फाँसियों पर चढ़ गये। आपने देश, जाति व वैदिक धर्म पर उच्च कोटि की प्रेरणाप्रद पठनीय कवितायें लिखीं। आपके निधन पर महरूम जी की लम्बी कविता का एक पद्य भारत व पाकिस्तान में किसी बड़े व्यक्ति के मरने पर वक्ता पत्रकार लगभग एक शताब्दी से लिखते व बोलते चले आ रहे हैं। पं. लेखराम जी के बलिदान पर लिखी आपकी कविता सुनकर आपके कविता गुरु मौलाना ने कहा था, ''तू एक दिन मेरा नाम रौशन करेगा।'' मैं ४५ वर्ष से यह कविता खोज रहा था। किसी ने सहयोग न किया। देश भर में घूम-घूम कर आर्य पत्रों से 'सरूर' जी की कई कवितायें खोज पाया। अब आर्य समाज कासगंज के पुस्तकालय से राहुल जी और कई कवितायें ले आये हैं। श्री राम, ऋषि दयानन्द, गऊ, माता सीता, विधवा, अनाथ, मातृभूमि आदि पर हृदय स्पर्शी ऐसी कवितायें प्राप्त हुई हैं, जिनमें डॉ. इकबाल ने प्रेरणा ली। आज से यह साहित्यिक कुली इनका देवनागरी में सम्पादन करना आरम्भ कर रहा हूँ। इसे एक जाति भक्त प्रकाशित प्रसारित करने को आगे आयेगा। शेष फिर लिखा जावेगा।

त्रैतवाद पर मौलिक तर्क:- हमने पं. शान्तिप्रकाश जी आदि विद्वानों के आर्य सिद्धान्तों पर प्रमाण संग्रह के मोटे-मोटे रजिस्टर देखे। अब मौलिक सैद्धान्तिक साहित्य की चर्चा समाजों में नाम-नाम की है। श्री डॉ. हरिश्चन्द्र जी की एक रोचक अंग्रेजी पुस्तक के कुछ पृष्ठ मैंने अपनी १०-११ वर्षीया नातिन मनस्विनी को पढ़ाये। उसे पुस्तक रोचक व पठनीय लगी। उसे स्कूल में बोलने को कहा गया। उसने डॉ. हरिश्चन्द्र जी की पुस्तक के आधार पर त्रैतवाद पर बोलकर वाह-वाह लूट ली। उसने कहा- संसार का कार्य-व्यापार व्यवहार सब तीन से ही चलता है-ग्राहक चाहिये, माल चाहिये और विक्रेता चाहिये। एक के न होने से व्यापार नहीं चल सकता। रोगी, डॉक्टर व औषधियों से ही अस्पताल चलता है। सिखों के ग्राम में नाई और नंगे पैर घूमने वालों के ग्राम में बाटा की दुकान क्या चलेगी? इसी प्रकार से आप सोचिये तो पता चलेगा कि तीन के होने से ही संसार चलेगा।

इसी प्रकार सृष्टि की रचना तीन से ही सम्भव है। सृष्टि रचना का जिसमें ज्ञान हो वह सत्ता (प्रभु) चाहिये, जिसके लिये सृष्टि की उपयोगिता या आवश्यकता है, वह ग्राहक (जीव) चाहिये तथा जिससे सृष्टि का सृजन होना है, वह माल (प्रकृति) चाहिये। डॉ. हरिश्चन्द्र जी की रोचक पुस्तक से यह पाठ उसे मैंने कभी स्वयं पढ़ाया था। ऐसे मौलिक तर्कों व लेखकों को मुखरित करिये।

श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी कहा करते थे- नीलामी १,२ व ३ पर छूटती है। दौड़ १,२ व ३ पर ही क्यों आरम्भ होती है? वह कहा करते थे, अनादि काल से तीन अनादि पदार्थों का मनुष्य जाति को यह संस्कार दिया जाता है। दौड़ या नीलामी तीन से आगे ५,७ व दस पर क्यों नहीं होती? अब सस्ते दृष्टान्त व चुटकुले सुनाकर वक्ता अपना समय पूरा करते हैं।

मांसाहार व शाकाहार:- डॉ. हरिश्चन्द्र जी ने ही विश्व में प्रथम बार यह अनूठी युक्ति दी है कि भेड़िये, बाघ एवं सिंह की गंध से हिरण, बैल, बकरी सब भाग जाते हैं। मनुष्य को देखकर गाय, बकरी आदि कोई जन्तु नहीं भागता। इससे सिद्ध होता है कि सब प्राणियों को यह स्वाभाविक ज्ञान है कि मनुष्य हिंसक या मांसाहारी योनि नहीं है। यह शाकाहारी प्राणी है। मेरे बारम्बार के अनुरोध पर या विनती पर भी हमारे कथावाचकों व भजनीकों ने पूर्वजों के व वर्तमान के मौलिक चिन्तन करने वाले पूज्य विद्वानों के ये तर्क घर-घर नहीं पहुँचाये।

रहमान व रहीम वाला तर्क:- अप्रैल प्रथम २०१६ के अंक में श्रीयुत पं. रणवीर जी ने विश्व पुस्तक मेले हैदराबाद में मुस्लिम मौलवियों के इस प्रचार अभियान को विफल बनाने सम्बंधी उनका लेख पढ़ लिया होगा। अनेक उच्च शिक्षित प्रतिष्ठित आर्यों ने बार-बार यह अनुरोध किया

है कि वेद आदि आर्ष ग्रन्थों में हजरत मुहम्मद के नाम का उल्लेख है- मुसलमानों के इस दुष्प्रचार के उत्तर में एक पुस्तक अवश्य लिखकर दूँ। वे तो पुराणों में भी मुहम्मद का नाम निकाल लाने का तमाशा करते हैं। हिन्दू -हिन्दू की रट लगाने वालों से इस दुष्प्रचार के प्रतिकार की आशा नहीं की जा सकती।

इस सेवक ने 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' तथा 'ज्ञान घोटाला' लघु पुस्तक में इसका उत्तर देकर सबकी बोलती बन्द कर दी है। आर्य समाज में पादरी स्काट व सर सैयद अहमद की रट लगाने वाले इन आक्रमणों का सामना नहीं कर सकते। जब रणवीर जी व राहुल जी ने चुनौती दी कि कुरान में प्राय: हर सूरत के आरम्भ में अल्लाह मियाँ महर्षि दयानन्द का नाम लेकर ही अपना कथन करता है। वे कुरान ले आये और कहा, ''दिखाओ कहाँ है स्वामी दयानन्द का नाम?''

झट से इन आर्य वीरों ने 'रहमान-उल-रहीम' निकालकर कहा, ''यह लो दयालु दयानन्द या दयावान दयानन्द के नाम से आरम्भ करता हूँ, लिखा है या नहीं?'' पाठक पढ़ चुके हैं कि यह सुनकर उनके पाँव तले से धरती खिसक गई। वे भाग खड़े हुए। हम आपसे बात नहीं करते। आप जाओ, ज्ञान छोड़ो। परोपकारिणी सभा अपने पाक्षिक 'परोपकारी' के द्वारा प्रत्येक मोर्चे पर आपको खड़ी दिखेगी। आप भी कुछ करो। सहयोग करो। कुछ सीखो। ऐसे साहित्य का प्रसार करो।

आमने-सामने बैठकर ज्ञान बढ़ाओ:- ज्ञान तो स्वाध्याय, संवाद तथा मनन-चिन्तन से बढ़ता है। आज के वैज्ञानिक साधन चलभाष, लेपटाप आदि ज्ञान प्राप्ति में सहायक तो हैं, परन्तु इन्हीं से कोई ज्ञान में पारंगत हो जाये-यह सम्भव ही नहीं। दिनभर कुछ जानकारी लेने वाले कृपालु, चलभाष पर अपने प्रश्न पूछते रहते हैं। कुछ तो पौराणिकों के प्रश्नों को लेकर, कोई ब्रह्मकुमारी मत, कोई बहाई मत, कोई ईसाई मत व सिखों के बारे में लम्बी चर्चा छेड़कर झटपट ठाकुर अमरसिंह जी, पं. देवप्रकाश जी व पं. शान्तिप्रकाश जी का आसन ग्रहण करना चाहते हैं। श्री स्वामी सम्पूर्णानन्द जी कई बार बहुत अच्छे विषय लेकर अच्छी चर्चा छेड़कर मेरा भी ज्ञान बढ़ाते हैं। मैं उन्हें कहता रहता हूँ-आमने सामने बैठकर शेष बात करिये। परोपकारिणी सभा वर्ष भर कई शिविर लगाती है। सभा से अनुरोध किया जा सकता है कि विविध विषयों पर सप्ताह दो सप्ताह का शिविर रखा जाये। अलभ्य साहित्य का जो भण्डार अब अजमेर में है, वह अन्यत्र कहीं भी नहीं। पं. शान्तिप्रकाश जी के मोटे-मोटे रजिस्टर सभा में सुरक्षित हैं। श्रद्धाराम जी का सत्यामृत प्रवाह, जियालाल जैनी का दयानन्द छलकपट दर्पण, उन्नीसवीं सदी का महर्षि, पं. गंगाप्रसाद शास्त्री जी का स्वामी दयानन्द का निज मत, मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी की कुल्लियात केवल अजमेर में ही कोई देख सकता है। पाठक मेरे आशय को समझने का यत्न करें।

मिलावट, हटावट, बनावट की रोकथाम:- आर्य समाज के लिये एक-एक श्वास देने वाले रक्त की धार से इस वाटिका को सींचने वाले एक नेता ने सवा सौ वर्ष पहले लिखा था कि कई व्यक्ति ऋषि की विचारधारा के कारण से नहीं, स्वप्रयोजन से आर्य समाज में घुसे। कुछ अपना उल्लू सीधा करके समाज को छोड़ भी गये। ऐसे ही कुछ लोगों ने आर्य समाज के सिद्धान्तों का हनन किया। इसके साहित्य व इतिहास में मिलावट, हटावट व बनावट करते चले गये। आर्य समाज के गौरव व इतिहास को रौंदा गया। इतिहास जो हम चाहें, वैसा लिखा जावे-यह एक घातक खेल है। महात्मा मुंशीराम जी ने लाला लाजपतराय के देश से निष्कासन के समय से लेकर (लाला लाजपतराय के अनुसार) सन् १९१५ तक आर्यसमाज के दमन, दलन व सरकार की घुसपैठ से समाज की रक्षा के लिये महात्मा मुंशीराम जी की सेवाओं व शूरता पर गत साठ-सत्तर वर्षों में कोई उत्तम ग्रन्थ आया क्या? यह इतिहास छिपाया व हटाया गया। आचार्य रामदेव जी को डी.ए.वी. कॉलेज से निकाला गया। यह दुष्प्रचार आरम्भ हो गया कि पढ़ाई बीच में छोड़ी गई। आचार्य जी के बारे में सर्वथा नया इतिहास गढ़ कर परोसा जा रहा है। स्वामी सोमदेव की मृत्यु एक ही बार हुई। उन्हें दूसरी बार फिर मारा गया। लाला लाजपतराय जी को ईश्वर ने तब जन्म दिया, वह इतिहास प्रदूषण वालों को नहीं जँचा, उनको अपनी इच्छा का जन्मदिवस अलाट किया गया। महात्मा हंसराज लिखते हैं कि उन्होंने ऋषि को न देखा, न सुना। प्रदूषणकारों ने महात्मा जी के लाहौर देखने से पहले ही उन्हें लाहौर ऋषि

का उपदेश सुना दिया। महाशय कृष्ण जी, नारायण स्वामी जी का नया इतिहास गढ़कर मिलावट कर दी।

ऋषि के जीवन काल में महाराणा सज्जन सिंह जी ने अनाथ कन्याओं की शिक्षा के लिए भारी दान दिया। इतिहास में हटावट करके यह घटना दी गई। हैदराबाद सत्याग्रह जब चरमोत्कर्ष पर था, स्वामी स्वतन्त्रानन्द अड़ गये कि मैं तो जेल जाऊँगा। आर्य नेताओं के सामने यह नया संकट खड़ा हो गया। महाराज को जेल जाने से रोकने के लिए बैठक पर बैठक बुलाई गई। यह इतिहास कहाँ किसने लिखा है? नारायण स्वामी जी का दबाव देकर महाशय कृष्ण जी ने लाहौर में आपरेशन करवाया। महाशय जी के बहुत दबाव देने पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने मुम्बई ओपरेशन करवाना मान लिया। यह इतिहास कहाँ गया? यह स्वर्णिम इतिहास हटाया गया। क्यों? ऋषि के जीवन काल में कर्नाटक में आर्यसमाज पहुँच गया। यह स्वर्णिम इतिहास हटावट का शिकार हो गया। पं. लेखराम जी का तिल-तिल जलने का इतिहास हटाया गया या नहीं? जिस रमाबाई के कारण सहस्रों स्त्रियाँ धर्मच्युत हुईं, आर्य समाज तड़प उठा, उस रमाबाई के फोटो छपने लगे। वह ऋषि की भक्त और प्रशंसक बना दी गई। यह क्या?

अजमेर से सोनी का पत्र आया:- बहुत समय पहले अजमेर से परोपकारी के एक प्रबुद्ध पाठक हमारे कृपालु श्रीमान् सोनी जी ने एक महत्त्वपूर्ण पत्र भिजवाया था। तब पत्र किसी पुस्तक में रखकर, मैं इसे भूल गया। आज इसे पाकर इस पर कुछ लिखने लगा, तो श्री डॉ. अशोक जी एक विशेष सामाजिक कार्य के लिए मिलने आ गये। पत्र मेरे हाथ में था। चारों ओर पुस्तकों के ढेर में पुनः इसे कहीं रख बैठा। पत्र का मुख्य बिन्दु तो ध्यान में है, सबके लाभार्थ उसपर विचार करते हैं। श्रीमान् सोनी जी ने तड़प-झड़प में श्री शिवव्रतलाल वर्मन (हजूर जी महाराज)की चर्चा पढ़कर यह सुझाव दिया कि श्री शिवव्रतलाल को ऋषि दयानन्द जी के काल का लिखने की बजाय श्री महात्मा हंसराज जी का समकालीन लिखना ठीक है। आपने महात्मा हंसराज से उनकी एक भेंट व आर्य गजट के सम्पादक नियुक्त किये जाने की पत्र में चर्चा की है।

जो कुछ जानकारी आपने पत्र में दी है, वह इस सेवक के लिये कोई नई नहीं है। आर्य समाज में इस समय इस लेखक के अतिरिक्त दूसरा कोई व्यक्ति नहीं, जिसने श्री शिवव्रतलाल का कुछ साहित्य पढ़ा हो। आर्य गजट का उन दिनों का तो एक भी अंक और शिवव्रतलाल जी का एक भी लेख अन्यत्र कहीं प्राप्य नहीं है। श्री सोनी जी ने ऋषि दयानन्द जी तथा महात्मा हंसराज जी से उनके सम्बन्धों का प्रश्न उठाया है। सोनी जी का प्रश्न या सुझाव अच्छा है। उनके सुझाव का स्वागत है।

यह लेखक अपने लेखों व पुस्तकों में कई बार यह चर्चा कर चुका है कि हजूर जी महाराज ने ऋषि जी का अपने दृष्टिकोण से एक जीवन चरित भी लिखा है। इसे सेवक ने अनेक बार पढ़ा है व उद्धृत करता रहता है। जब महर्षि अक्टूबर सन् १८७९ में प्रयाग पधारे थे, तो नगर में हलचल मच गई। युवक भारी संख्या में कायस्थ पाठशाला हाल में उन्हें सुनने गये। सब पर गहरा प्रभाव पड़ा। शिवव्रतलाल जी का एक सहपाठी ऋषिवर की अमिट छाप लेकर लौटा। उससे ऋषि का सन्देश व चर्चा सुनकर आप भी बहुत प्रभावित हुए। बरेली में भी आर्य शिक्षण संस्था से जुड़े थे, सब बातें इस विनीत की जानकारी में हैं।

रही सोनी जी की मुख्य बात कि उन्हें महात्मा हंसराज जी का समकालीन लिखना चाहिये। यदि कोई ऐसा कहता व बताता है, तो इसमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। श्री शिवव्रतलाल जी महात्मा हंसराज से आयु में थोड़े बड़े थे, बस इतना ध्यान रहे। महात्मा जी से सम्पर्क भी चिरस्थायी नहीं था। ऋषि से प्रभावित तो थे, परन्तु आर्य समाज में स्वल्पकाल तक जो आप रहे, ऐतिहासिक वीर पुरुषों व देवियों को मुख्य विषय बना कर ही लिखते रहे। उन पर कबीर पंथ का ही विशेष प्रभाव था।

आर्य समाज में रहते हुए आपने एक साहसिक कार्य किया। लाला लाजपतराज जी के देश से निष्कासन के समय तब महात्मा मुंशीराम जी का महात्मा दल लाला जी के पक्ष में उठ खड़ा हुआ और महात्मा हंसराज जी के नेतृत्व में कॉलेज वाले गवर्नर को कालका में लाला जी से सम्बंध विच्छेद करने का आश्वासन दे आये, तब शिवव्रतलाल जी भी महात्मा मुंशीराम जी के पीछे डट गये। लाला जी के पक्ष में 'आर्य मुसाफिर' मासिक में आपका ओजस्वी लेख छपा था। यह लेख इस सेवक के पास सुरक्षित है। आपके थियोसोफिकल सोसायटी की

पोल खोलते हुए एक पुस्तक में कर्नल आल्काट को ऋषि जी से छल करने का भी दोषी सिद्ध किया है।

आपने बहुत ओजस्वी भाषा में यह लिखा है कि गत कई शताब्दियों में महर्षि दयानन्द सरीखा निष्कलङ्क ब्रह्मचारी, निर्भीक महात्मा व सत्य के लिये धन-सम्पदा व वैभव पर लात मारने वाला दूसरा महापुरुष नहीं मिलेगा।

यह भी लिखा है कि चाँदापुर के शास्त्रार्थ में कबीर पंथियों को मुसलमान बनने से बचाने के लिए ऋषि जी को बुलाना पड़ा। हिन्दुओं ने तब पहली बार मौलवियों व पादरियों को एक हिन्दू महात्मा के सामने पीठ दिखाकर भागते हुए देखा। श्री शिवव्रतलाल जी के महर्षि दयानन्द विषयक इन संस्मरणों व उद्गारों को मुखरित करना मेरे लेखन का प्रयोजन रहा है।

तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानीः- हिन्दी साहित्य में एक नई विधा से इस सेवक ने आर्य जाति व आर्य समाज का इतिहास लिखने का सफल प्रयास किया। 'तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी', 'बड़ों की बड़ी बातें', स्मृतियों की यात्रा आदि नामों से कई पुस्तकें प्रकाशित कीं व करवाईं। इनकी लोकप्रियता सबके सामने है। जिनको लेखक का नाम ही नहीं सुहाता, वे भी इन्हें चाव से पढ़ते-पढ़ाते हैं। अब माँग है कि इस पुस्तक माला के कुछ और भाग निकालो। परोपकारी में भी प्रेरक प्रसंग देते जाओ। अगले भाग तो मेरे प्रेमी युवा आर्यवीर ही छपवायेंगे। 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' के तीन भाग तो एक मास में प्रकाशनार्थ तैयार हो जायेंगे।

सेवाधन के धनी आर्य नेता वैद्य रविदत्त जीः- ब्यावर के आर्य मन्दिर में एक रोगी, वयोवृद्ध महात्मा की दो आर्य पुरुष अत्यन्त भक्तिभाव से सेवा किया करते थे। उसे स्नान आदि सब कुछ ये ही करवाते थे। एक जैनी ने इनको सुधबुध खोकर सेवा करते कई बार देखा। एक दिन उसने आर्य सेवक वैद्य रविदत्त जी से कहा, ''क्या मेरी अन्तिम वेला में भी ऐसी सेवा हो सकती है?'' वैद्य जी ने कहा, ''भाई, आपने इच्छा व्यक्ति की है तो आपकी भी अवश्य करेंगे।''

उसने अपनी सम्पत्ति की वसीयत आर्य समाज के नाम कर दी। समय आया, वह रुग्ण हो गया। सम्भवतः शरीर में ..... पड़ गये। वैद्यजी अपने सैनिक ओमप्रकाश झँवर को साथ लेकर समाज मन्दिर में उसका औषधि उपचार तो करते ही थे, मल-मूत्र तक सब उठाते। मल-मल कर स्नान करवाते। संक्षेप से यह जो घटना दी है, यही तो स्वर्णिम इतिहास है। कहाँ किसी ने यह इतिहास लिखा है? स्कूलों, संस्थाओं व सम्पदा के वृत्तान्त का नाम इतिहास नहीं, इतिहास वही है, जो ऊर्जा का स्रोत है।

ठाकुर शिवरत्न जी पातूरः- विदर्भ में परतवाड़ा कस्बा में पंकज शाह नाम का एक सुशिक्षित युवक दूर-दूर तक के ग्रामों में प्रचार करवाता रहता है। इसी धुन का एक धनी युवक ठाकुर शिवरत्न इस क्षेत्र में ओम् पताका लेकर ग्राम-ग्राम घूमकर प्रचार करता व करवाता था। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को उसने जीवन में भी उतारा। वाणी से तो वह प्रचार करता ही था। वह एक प्रतिष्ठित सम्पन्न परिवार का रत्न था।

उसकी पुत्री विवाह योग्य हुई। उसने महात्मा मुंशीराम जी को अपना आदर्श मानकर जाति बंधन, प्रान्त बंधन तोड़कर अपनी पुत्री का विवाह करने की ठान ली। महात्मा मुंशीराम का ही एक चेला, कश्मीरी आर्य युवक पं. विष्णुदत्त विवाह के लिये तैयार हो गया। विष्णुदत्त सुयोग्य वकील, लेखक व देशभक्त स्वतन्त्रता सैनिक था। महाशय कृष्ण जी का सहपाठी था। ठाकुर जी को यह युवक जँच गया। आपने कन्या का विवाह कर दिया। ऐसा गुण सम्पन्न चरित्रवान् पति प्रत्येक कन्या को थोड़ा मिल सकता है!

हिन्दू समाज हाथ धोकर ठाकुर जी के पीछे पड़ गया। श्री ठाकुर शिवरत्न का ऐसा प्रचण्ड सामाजिक बहिष्कार किया गया कि उन्हें महाराष्ट्र छोड़कर पंजाब आना पड़ा। कई वर्ष पंजाब में बिताये, फिर महाराष्ट्र लौट गये। पातूर का कस्बा नागपुर के समीप है। संघ की राजधानी नागपुर है। हिन्दू समाज के कैंसर के इस महारोग जातिवाद से टक्कर लेने वाले पहले धर्म योद्धा ठाकुर शिवरत्न का इतिहास क्या संघ ने कभी सुनाया है? इतिहास प्रदूषण अभियान वालों ने ठाकुर शिवरत्न के कष्ट सहन व सामाजिक प्रताड़नाओं का प्रेरक इतिहास हटावट की सूली पर चढ़ा दिया है। मैं जीते जी ठाकुर शिवरत्न के नाम की माला फेरता रहूँगा।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : अक्टूबर, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। **शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।**

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

अनुसारक: भाषाई समस्याओं से निपटने का एक उपकरण

– अक्षर भारती, सुखदा

आज इंटरनेट (internet) के आ जाने से दुनिया भर की जानकारी हमें उपलब्ध है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान से सम्बन्धित अधिकतर सामग्री इंटरनेट पर विद्यमान है पर इस उपलब्ध सामग्री का अधिकांश भाग अंग्रेजी भाषा में होने से यह सामान्य भारतीयों की पहुँच से बाहर है, जिसके कारण ऐसा लगने लगा है कि अंग्रेजी सीखना आज सभी के लिये अनिवार्य है।

इसके परिणाम स्वरूप हमारे छात्र छात्राओं को बहुत सारा समय और बल ज्ञान–विज्ञान सीखने में लगाने के बजाय अंग्रेजी भाषा सीखने में लगाना पड़ता है। अंग्रेजी जैसी अवैज्ञानिक भाषा सीखने के कारण न केवल हमारी नई पीढ़ी का काफी समय एवं बल व्यर्थ होता है, बल्कि हमारी संस्कृति, हमारे संस्कारों तथा विद्यार्थियों की मौलिक प्रतिभा पर भी कुठाराघात होता है। ऐसे समय में तकनीक इस समस्या को हल करने में हमारी सहायक हो सकती है।

लगभग पिछले २५ वर्ष से IIIT-Hyderabad और University of Hyderabad के कम्प्यूटर वैज्ञानिकों और भाषा वैज्ञानिकों की एक टीम यन्त्रानुवाद (machine translation) पर, विशेष रूप से अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं में तथा भारतीय भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर काम कर रही है। यहाँ पर विकसित उपकरण 'अनुसारक' (Anusaraka) का प्रदर्शन वर्तमान के गूगल अनुवादक (Google Translate) और बिंग (माइक्रोसॉफ्ट) (Bing Translator) के रूप में विद्यमान मुफ्त संसाधनों के समकक्ष है। वर्तमान में इस टीम का ध्यान मुख्य रूप से अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के लिए अनुसारक विकसित करने पर केन्द्रित है।

जैसा कि अनुसारक नाम से भी स्पष्ट है, यह स्रोत भाषा का अनुसरण करते हुए अनुवाद करने का प्रयास करता है, जिसके कारण पाठक को ऐसा अनुभव होता है जैसे कि वह मूल भाषा में ही किसी लेख को पढ़ रहा हो। इससे पाठक लेखक की शैली और भाव दोनों को ही समझने में कामयाब होता जाता है। अनुसारक अनुसरण के साथ-साथ अनुवाद भी देता है। उपयोगकर्त्ता अपनी सुविधा के अनुसार दोनों या फिर किसी एक का चयन कर सकते हैं।

अनुवाद मात्र न देकर परत दर परत स्रोत भाषा का अनुसरण कर उपयोगकर्त्ता की मातृभाषा में स्रोत भाषा की जानकारी देने के पीछे मुख्य कारण किसी भी भाषा का शत प्रतिशत अनुवाद सम्भव न होना भी है। मोटे रूप में एक उदाहरण के तौर पर देखें तो " He ate apples." का हम "उसने सेब खाये" अनुवाद हिन्दी में करते हैं तो कई बार लगता है कि हमने ठीक-ठीक अनुवाद किया है, पर थोड़ा और अधिक ध्यान दें, तो पाते हैं कि मूल भाषा अंग्रेजी के शब्द "He" में जितनी जानकारी है उतनी अनूदित हिन्दी भाषा के शब्द "उसने" में नहीं है। अंग्रेजी के शब्द "He" में पुंल्लिङ्ग, अन्यपुरुष और एकवचन की जानकारी है, जबकि हिन्दी के शब्द "उसने" में मात्र अन्यपुरुष और एक वचन की जानकारी है।

परत दर परत स्रोत भाषा का अनुसरण करने का एक अन्य विशेष लाभ उस भाषा के शब्दों का शब्दबोध देना भी है। शब्दबोध के द्वारा वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का अन्य शब्दों के साथ विद्यमान सम्बन्ध को दर्शाने के साथ-साथ स्रोत भाषा में विद्यमान विभिन्न प्रकार की अन्य जानकारियों को भी स्पष्ट रूप से दर्शाया जाता है, जिससे कि अनुवाद में भ्रान्ति की सम्भावना को कम से कम किया जा सके। जैसे हिन्दी भाषा जानते हैं कि "राम वन गया" इस वाक्य में एकत्व संख्या से युक्त राम कर्त्ता है, वन कर्म है और गमनानुकूल भूतकालिक व्यापार है। इस प्रकार शब्दबोध करने से मूल भाषा में विद्यमान जानकारी की किसी अन्य भाषा में अनुवाद करते समय स्पष्ट रूप से परिवर्तित कर दिये जाने से अनुवाद करने में किसी प्रकार की जानकारी के नष्ट न होने से अनुवाद में पारदर्शिता बनी रहती है।

इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

१. यह भारतीय परम्परागत शास्त्रों (जैसे कि पाणिनीय व्याकरण, मीमांसा आदि) में विद्यमान भाषा के सिद्धान्तों

का उपयोग कर विकसित किया गया है।

२. यह सभी स्तर के व्यक्तियों को सूचना प्रौद्योगिकी (information technology) में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है।

३. यह परत दर परत अनुवाद देता है जो कि स्रोत भाषा (source language) में विद्यमान जानकारी को शत प्रतिशत लक्ष्य भाषा (target language) में देने का दावा करता है।

४. स्रोत भाषा में विद्यमान जानकारी को शत प्रतिशत लक्ष्य भाषा में प्राप्त करने के लिये यह कुछ प्रशिक्षण की आवश्यकता भी बताता है।

५. यह सॉफ्टवेयर open-source mode में GPL license में विकसित और वितरित किया गया है, जिससे अधिकाधिक लोग इसका लाभ उठा सकें, इसमें भागीदार हो सकें।

नमूने के तौर पर अनुसारक का output निम्न प्रकार का होता है:

२.१.A	The	dog	who	chased	me	was	black
२.१.C	-	कुत्ता/पीछे-लगाना (०)	कौन	पीछा/उत्कीर्ण-करना/ढाँचा-(@ed/@en)	मुझे*	था	काला/श्यामअंधेरा।-।
२.१.D	The	Dog	who	chase	me	be	black
२.१.I	वह	कुत्ता	जो	पीछा कर या	मैं	था(या)	काला
२.१ K	वह	कुत्ता	जिसने	पीछा किया	मेरा	था	काला

इस output की प्रत्येक परत स्रोत भाषा अंग्रेजी में विद्यमान जानकारी को विभिन्न प्रकार से लक्ष्य भाषा हिन्दी में लाकर दिखा रही है, जिसमें अन्तिम परत में हिन्दी अनुवाद पूर्ण रूप से हो चुका है, केवल हिन्दी भाषा के शब्दों को अंग्रेजी भाषा के शब्दक्रम में रहने दिया गया है। हिन्दी में अंग्रेजी की तरह निश्चित शब्द क्रम के अत्यधिक आवश्यक न होने से वाक्य का तात्पर्य भली प्रकार से पाठक की समझ में आ जाता है। परत दर परत अनुवाद देने का सबसे बड़ा लाभ ये है कि यदि कभी अन्तिम परत में विद्यमान अनुवाद प्रयोगकर्त्ता को गलत लगे तो उसके पास ऊपर की परतों को देखकर सही जानकारी प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर विद्यमान हैं, जबकि Google जैसे अन्य संसाधनों में यह सम्भव नहीं है।

अधिक जानकारी के लिये अनुसारक की website: anusaaraka.iiit.ac.in पर जाकर देखें।

- आई.आई.आई.टी. हैद्राबाद

ज्योतिष - परिचय शिविर

आर्यजगत् के प्रसिद्ध ज्योतिष-विद्वान्, श्री मोहन कृति आर्ष पत्रक (पंचांग) के निर्देशक-रचयिता श्री दार्शनेय लोकेश जी, नोयडा ने ऋषि उद्यान, अजमेर में शुद्ध ज्योतिष-परिचय का प्रशिक्षण देने के लिए चार दिन का समय प्रदान किया है। वे २५ से २८ जून २०१६ तक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे व ज्योतिष सम्बन्धी शंकाओं-समस्याओं का भी समाधान करेंगे। इसमें डेढ़-डेढ़ घण्टे की दो कक्षाएँ प्रात: ९.३० से ११ व दोपहर २ से ३.३० तक होंगी। प्रात:-सायं यज्ञ-प्रवचन यथावत् चलते रहेंगे।

इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रबुद्ध आर्यजन व ज्योतिष में रुचि रखने वाले महानुभव सम्पर्क कर सकते हैं। सूचना व स्वीकृति प्राप्त सज्जन ही इसमें भाग ले सकेंगे। संख्या सीमित रखी गई है।

सम्पर्क- आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

दूरभाष- ०९४१४००६९६१ (रात्रि- ८.३० से ९.३०)

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. **महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)**

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. **'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः**

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशोर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. **इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञास**

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. **आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती**

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. **जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव**

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - पुराण-तत्त्व-प्रकाश

लेखक - निम्मन लाल वैश्य

प्रकाशक - सत्य धर्म प्रकाशन, झज्जर-हरियाणा

मूल्य - ४००=०० **पृष्ठ संख्या** - ५२७

लेखक का कथन है कि अठारह पुराण महर्षि व्यास द्वारा रचित नहीं है, स्वार्थी तत्वों ने आर्य जाति को गहरे गर्त में डुबो दिया है। वे महर्षि व्यास के नाम से अपना मनोरथ सिद्ध कर रहे हैं। उन्होंने भारतीयों को अनभिज्ञ बना दिया है। वेद का केवल नाम ही रहा। धर्म का स्वरूप गौण हो गया। सनातन धर्मी पुराणों को व्यासकृत मानते आ रहे हैं। इन पुराणों में महापुरुषों पर क्या-क्या आक्षेप किये गए हैं! जिन लोगों ने किए हैं, वे अपना उल्लू सिद्ध कर रहे हैं। लेखक इस भ्रम जाल को मिटाने के लिए योग्य पण्डितों की सहायता से सही वर्णन कर अंधविश्वास व गपोड़ों तथा अश्लील सामग्री को हटाना चाहता है, ताकि लोग वास्तविकता को जानें।

पुराणों के नाम भी विचित्र-विचित्र हैं। उनकी कथाएँ भी अविश्वसनीय है। जहाँ देवी-देवताओं की गरिमा होनी चाहिए, वहाँ उसे खाक में मिला दिया है। हमारी संस्कृति को भी पुराणकारों ने मटियामेट कर दिया है। आज पोंगा पंडितों की बहार है। हर कोई भागवत की कथा बाँच रहा है। महिलाएँ भी पीछे नहीं हैं। भगवत कथा में वे भी अग्रणी हैं। राधे-राधे करके तथा रास-लीला, कृष्ण सुदामा आदि की ऊपरी-ऊपरी बातों को बताकर भागवत के नाम मात्र से कल्याण एवं मोक्ष प्रदान कराते हैं। इससे सुगम मार्ग क्या हो सकता है?

लेखक एवं सम्पादक ने वेद के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। अठारह पुराण व्यास जी द्वारा रचित नहीं हैं। लेखक ने तीन भागों में अलग-अलग परिच्छेदों के माध्यम से पुराणों पर प्रकाश डाला है। पुराणों की रचना, प्रचलन के कारण, सुनने का फल, महादेव, विष्णु, श्री कृष्ण, राम, ब्रह्म का निर्गुणत्व, मूर्तिपूजा का निषेध, शिवलिङ्ग पूजा, अलग-अलग स्नान, इन्द्रलीला, ब्रह्मलीला, अवतार, एकादशी महत्त्व, तीर्थ प्रकरण, तीर्थ यात्रा, अनेक कथाएँ, श्राद्ध, गया श्राद्ध आदि पर पूर्ण विवेचन एवं वास्तविकता को स्पष्ट किया गया है। शिवलिङ्ग के विषय में पुराणों में यह उल्लेख आता है-

कृष्ण चतुर्दशी को जो प्रजापति के लिङ्ग को स्नान कराता है और पूजन करता है, वह सब पापों से छूट जाता है।

ज्ञान व अज्ञान से मनुष्य जो पाप करता है, वह सन्ध्या को शङ्कर को घृत-स्नान कराने से नष्ट हो जाते हैं।

जो दूध से स्नान कराता है, उसको सात जन्म तक आरोग्य, सुन्दर रूप आदि मिलते हैं।

अग्नि पुराण में लिखा है कि मन्दिर का बनाने वाला सौ कुल का उद्धार करके विष्णु लोक को जाता है।

सम्पूर्ण यज्ञ, तप, दान तथा तीर्थ में स्नान करने और वेदों के पढ़ने से जो फल होता है, उससे करोड़ों गुणा फल शिवलिङ्ग की स्थापना से मिलता है।

लेखक व सम्पादक महोदय का साधुवाद है, जिन्होंने अठारह पुराणों की पोल खोलकर सत्य को सामने रखा है और वह भी निराकरण पूर्ण आधार पर, जिसका विरोध है ही नहीं। ठग अपनी दुकान चलाकर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। लोग सत्य को स्वीकार कर अन्धानुकरण को छोड़ें, इसी में उनका कल्याण है। वेद सर्वोपरि हैं। इस ग्रन्थ में पुराणों के अन्धकार को छोड़ वेद के प्रकाश को प्राप्त करने की बात प्रश्नोत्तर माध्यम से स्पष्ट की गई है। लेखक का साहस सराहनीय है।

देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४**

मेरी अमेरिका यात्रा

– डॉ. धर्मवीर

पिछले अंक का शेष भाग.....

२० मार्च २०१६ को रविवार था, नियमानुसार सत्संग में प्रथम पं. सूर्यकुमार जी ने यज्ञ कराया, श्रीमती श्रीवास्तव ने भजन गाये। फिर मेरा व्याख्यान हुआ। आज का विषय था 'आधुनिक पीढ़ी को वैदिक संस्कर कैसे दिये जायें?'। व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर हुए। आर्य समाज में विद्यालय चलता है, बच्चों के साथ होली का पर्व बहुत उत्साह के साथ मनाया गया।

भोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में श्री मनीष गुलाटी जी नहीं आ पाये थे, उनका हालचाल पूछने उनके घर गये। पहले से स्वास्थ्य में सुधार था। श्री हरिश्चन्द्र जी के घर बैठकर अमेरिका आर्यसमाज के कार्य में कैसे प्रगति हो सकती है? क्या बाधायें हैं? आदि विषयों पर विचार विमर्श चलता रहा। रात्रि का भोजन श्री प्रवीण जी के घर था। वे पक्षाघात से पीड़ित हैं, कहीं आना-जाना सम्भव नहीं है, उनके घर जाकर भोजन किया। समाज के कार्यक्रम की बातें हुईं। रात्रि जसवीरसिंह जी के घर लौटकर विश्राम किया।

२१ मार्च भोजन करके जसवीर जी के साथ नासा केन्द्र के लिये प्रस्थान किया। यह अमेरिका का अन्तरिक्ष अनुसन्धान केन्द्र है, इसकी शाखाएँ अनेक स्थानों पर है, पर कार्यालय ह्यूस्टन में है।

नासा जाकर पहले नासा का परिचय देने वाली एक फिल्म देखी, उसमें भेजे जाने वाले उपग्रहों के विषय में परिचय दिया गया था। फिर संग्रहालय में रखे हुये उपग्रह देखे, जो अन्तरिक्ष की यात्रा करके लौटे हैं। जनता उनके अन्दर जाकर उपग्रह कैसे काम करता है, देख सकती है। वहाँ से लौटते हुए डॉ. राजसिंह छिकारा जी के घर जाकर उनसे भेंट की, ये जूआँ सोनीपत के निवासी हैं। विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं, आपका परिचय सोनीपत यज्ञ समिति के समारोह के अवसर पर रणधीरसिंह जी ने दिया था, उन्होंने आपसे बात भी कराई थी। उनसे भेंट की, उनके यहाँ भोजन कर, भारत व वहाँ चल रहे आर्य समाज के कार्य की चर्चा की। वहाँ से लौटकर श्रीमती बेला जैन के घर गये, घर पर उनके पति आनन्द जैन और शेखर अग्रवाल व श्रीमती अग्रवाल भी मिले। श्रीमती बेला सभा के वरिष्ठ उपप्रधान शत्रुघ्न आर्य जी की पुत्री हैं तथा संरक्षक गजानन्द जी आर्य की भांजी हैं। मिलकर प्रसन्नता हुई तथा घर-परिवार की चर्चा हुई। उनका यहाँ आर्य समाज से सम्पर्क है।

वहाँ से लौटते हुए श्री अमृत बहन जी की छोटी बहन श्रीमती रजनी कोहली आर्य समाज के कार्यक्रम में मिली थीं और उन्होंने घर आने का आग्रह किया था। उनके घर पहुँचे, घर पर उनके पति और पुत्र थे। बहन केन्या रहती हैं। ह्यूस्टन में उनका बेटा पढ़ता है। बेटे की आयुर्वेद और अध्यात्म में रुचि है। आयुर्वेद औषध वनस्पतियों के उत्पादन का उसका प्रयास है। बहन जी के यहाँ भोजन करके जसवीर जी के साथ घर लौट कर अगले दिन की यात्रा की सज्जा की। विश्राम किया।

२२ मार्च आज सनफ्रान्सिस्को के लिये प्रस्थान किया। जसवीर जी आज कार्यालय के कार्य में व्यस्त थे, डॉ. हरिश्चन्द्र जी तथा डॉ. कविता जी आ गये। ८ बजे उनके साथ हवाई अड्डे के लिये निकले। मार्ग लम्बा था, समय आर्य समाज के प्रचार प्रसार की चर्चा में निकला। जार्जबुश हवाई अड्डे पहुँचकर आपने सुरक्षा जाँच पूर्ण होने तक प्रतीक्षा की। जाँच पूर्ण होने की सूचना देने पर वे विदा हुए। साढ़े चार घण्टे की यात्रा कर साढ़े तीन बजे यान सनफ्रांसिस्को पहुँचा। अड्डे पर भास्कर और सुयशा दोनों आ गये थे। औपचारिकता करके हम सुयशा के घर सनीवेल पहुँच गये। यह क्षेत्र खाड़ी का क्षेत्र है, हरा-भरा होने के साथ सम तापमान वाला है, यहाँ अधिक गर्मी-सर्दी नहीं होती। यहाँ सभी सूचना तकनीकी के बड़े संस्थान कार्यरत हैं। सभी के मुख्य कार्यालय इसी स्थान पर हैं। घर पर थोड़ा विश्राम कर सुयशा के साथ यहाँ के हिन्दू मन्दिर में जाना हुआ। इस मन्दिर की विशेषता है। इस क्षेत्र में रहने वाले भारतीय जितने देवी-देवता मानते हैं, सभी एक मन्दिर में स्थापित

हैं, किसी भी देवता के लिये अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं। इस क्षेत्र में भारतीय बाजार हैं, जिसमें सभी प्रकार का भारतीय सामान मिल जाता है। लौट कर संगणक पर समाचार देखे, रात्रि विश्राम किया।

२३ मार्च को सुयशा के साथ स्थानीय पुस्तकालय देखा। एक गाँव का पुस्तकालय भी ऐसा है, जैसा हमारे विश्वविद्यालयों में नहीं होता। आज डॉ. सोनी जी और श्री विश्रुत प्रधान प्रतिनिधि सभा अमेरिका से वार्ता हुई। दोनों का आग्रह था कि यहाँ का भी कार्यक्रम अवश्य बनायें।

२४ मार्च को दोपहर बाद यहाँ का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय देखने गये। इसका नाम स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय है। इसके संस्थापक ने अपने पुत्र की मृत्यु के पश्चात् उसके स्मारक के रूप में इसका निर्माण कराया था। यह एक सौ पच्चीस वर्ष पुराना विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के द्वार पर बहुत विशाल सुन्दर चर्च बना हुआ है। पुराने भवन एक ही शैली में बने हुये हैं। आधुनिक विषयों के भवन अत्याधुनिक ढंग से बने हैं। बहुत बड़ी और बहुत ऊँची वेधशाला बनी हुई है। विश्वविद्यालय, हरे-भरे मैदान और ऊँचे-ऊँचे वृक्ष विशाल क्षेत्र तक दिखाई देते हैं। पुस्तकालय भी विशाल है। परिसर में अधिकांश लोग पैदल और साइकिल पर ही चलते दिखाई देते हैं।

२५ मार्च को प्रथम विश्रुत से बात हुई तो अटलाण्टा का कार्यक्रम बनाकर टिकिट ले लिये। डॉ. सोनी जी से देर से सम्पर्क हुआ, उनका भी आग्रह रहा, तो अलग टिकिट लेना पड़ा, क्योंकि पहले टिकट के पैसे मिलने नहीं थे। इस प्रकार जो यात्रा एक दौर में हो सकती थी, वह दो दौर की हो गई। सनफ्रान्सिस्को से शिकागो, शिकागो से सनफ्रान्सिस्को एवं सैनहोजे से अटलाण्टा-सैन होजे।

२६ मार्च शनिवार था, अत: आज भ्रमण के लिये यहाँ का प्रसिद्ध स्थान रेड वुड राष्ट्रीय उद्यान जाने का कार्यक्रम बना। सनीवेल से सनफ्रांसिस्को, वहां समुद्र पर पुल बना है, जिसे गोल्डन ब्रिज के नाम से जाना जाता है। यहीं समुद्र में एक पुरानी जेल है, जिसमें खूँख़ार कैदियों को रखा जाता था। यहाँ से समुद्र पार कर एक जंगल में गये, जो सुरक्षित वन है। यह बहुत बड़ा नहीं है फिर भी पर्याप्त बड़ा है। इस में तीन सौ फुट ऊँचे वृक्षों को संरक्षित रखा गया है। इस जंगल में चारों ओर पहाड़ियाँ हैं। पर्यटक पगडण्डियों से पहाड़ों पर चढ़कर जंगल का सौन्दर्य देखते हैं। इसमें पानी के छोटे-छोटे झरने हैं। अभी अनेक वर्षों से इस प्रदेश में वर्षा नहीं हुई है। पर्वत पर घूमते हुए वापस घर पहुँच गये।

२७ मार्च का रविवार था। आज एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल की ओर गए, यह समुद्रतट है। प्रशान्त महासागर के किनारे-किनारे सत्रह मील तक मध्य-मध्य में दर्शनीय स्थल हैं, जहाँ समुद्र का तथा समुद्री जीवों को देखने का आनन्द पर्यटक उठाते हैं। यह स्थल किसी का निजी है। टिकिट लेकर यहाँ भ्रमण किया जा सकता है। इन स्थानों पर पेड़-पौधे व अन्य जीवों की सुरक्षा एवं संरक्षण की उत्तम व्यवस्था की गई है। पेड़ों को छूना भी मना है। इस क्षेत्र को मॉण्टे १७ माइल ड्राइव के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार समुद्र, वन, पर्वतों के दृश्य देखते हुए सायंकाल घर लौटे आये।

२८ मार्च के दिन स्वाध्याय किया और पुस्तकालय जाकर वहाँ के साहित्य का अवलोकन किया।

२९ मार्च का दिन लेख लिखने और सम्पर्क करने में व्यतीत हुआ।

३० मार्च को इस क्षेत्र में एक जापानी पार्क जो सुन्दर उद्यान है, वह देखा। उसमें जापानी वातावरण दिखाई देता है, उद्यान बहुत बड़ा नहीं, परन्तु बहुत सुन्दर और स्वच्छता वाला है।

३१ मार्च के दिन स्थानीय विद्वानों से विचार-विमर्श किया तथा अगले दिन शिकागो जाना था, उसकी सज्जा में व्यतीत किया।

१ अप्रैल २०१६ को प्रात: ६ बजे घर से सुयशा भास्कर के साथ हवाई अड्डे के लिये निकले, आधा घण्टे में सन्फ्रासिस्को हवाई अड्डे पहुँच गये, सुरक्षा जाँच तक दोनों ने प्रतीक्षा की, फिर मैं अन्दर चला गया, दोनों घर लौट गये। वायुयान १० बजे चला और वहाँ के समयानुसार ३ बजे शिकागो पहुँच गया। वहाँ पर आर्य समाज की ओर से श्री भूपेन्द्र शाह और उनकी धर्मपत्नी लेने आये हुए थे। शाह पहले इंजीनियर थे। अब सामाजिक कार्यों में समय

देते हैं। हम सब किरीटभाई शाह के घर पहुँचे, वहाँ डॉ. सोनी और श्रीमती सोनी जी आ गये थे। प्रथम सबने कुछ स्वल्पाहार लिया, फिर धार्मिक संवाद चला, दो घण्टे ईश्वर की साकारता-निराकारता, मूर्त्तिपूजा की निस्सारता आदि पर बातें हुई। भोजन करके अन्य सब लोग अपने घर लौट गये। मैं किरीटभाई शाह का अतिथि रहा। वहीं रात्रि विश्राम किया।

२ अप्रैल प्रात: १० बजे डॉ. सोनी पधारे, उनके साथ सबने प्रातराश किया, फिर डॉ. सोनी जी ने साथ चलने को कहा। वहाँ से निकल कर सबसे पहले स्वामी विवेकानन्द केन्द्र गये। पुस्तकालय, कार्यालय, सभा भवन देखा। मुख्य स्वामी जी केन्द्र से बाहर व्याख्यान देने गये थे। केन्द्र का बड़ा मन्दिर और भवन बनने वाला है। जानकारी मिली कि इनके कई केन्द्रों पर मांसाहारी-शाकाहारी दोनों भोजन बनते हैं, क्योंकि स्वामी विवेकानन्द ने दोनों को उचित माना है। औरों के लिये कोई तर्क हो सकता है, परन्तु संन्यासी के साथ इसकी संगति नहीं बैठती। यहाँ से चिन्मय मिशन गये, वहाँ कोई नहीं था, सब कहीं शिविर में गये हुए थे। फिर हिन्दू मन्दिर गये, वहाँ एक ओर सभा चल रही थी, भक्त लोग मन्दिर में पूजा अर्चना में लगे थे। दोपहर का समय हो रहा था, डॉक्टर जी की बहन के घर पहुँचे, भोजन किया, कुछ चर्चा हुई। वहाँ से निकल कर शिकागो नगर केन्द्र में जाकर मिशिगन झील देखी, यहाँ पहले संसार का सबसे ऊँचा भवन कहा जाने वाला सी.एस. टावर देखा। अमेरिकी राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का ट्रम्प टावर देखा। नक्षत्र मण्डल, कला संग्रहालय आदि पर बाहर से एक दृष्टि डाली, लौटते हुये एक संस्था क्रिया योग केन्द्र देखा। साधु स्वामी सहजानन्द और उनके साथी साधु से मिलकर संन्यास योग सम्बन्धी बातचीत हुई, लौटकर घर पहुँचे। भोजन कर भ्रमण का विचार किया, वर्षा हो रही थी। यहाँ का मौसम विचित्र है, कहने को तो बसन्त का समय है, प्रात: हिमपात हो रहा था, दिन में धूप खिली थी, सायंकाल वर्षा हो रही थी। वर्षा के कारण गाड़ी में घूमने निकले, लौटते हुए मार्ग में बहुत बड़ा जुआघर था, देखने के लिये अन्दर गये। हजारों स्त्री पुरुष बड़ी-छोटी सभी आयु के अलग-अलग तरीकों से खेलने में लगे थे। यहाँ के लोगों का अपने अकेलेपन को दूर करने का यह सामाजिक केन्द्र है। लौटकर घर पहुँचे। डॉक्टर जी के श्वसुर डॉ. ओम्प्रकाश वर्मा वाले पुराने आर्य और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे, वे परोपकारी पत्रिका के आजीवन पाठक रहे। उन्होंने बर्मा, अमेरिका में बहुत सारे लोगों को परोपकारी पत्रिका का ग्राहक बनाया था। डॉक्टर जी ने शिकागो में एक बड़ा भवन, जिसमें पहले चर्च था, क्रय करके यहाँ आर्य समाज मन्दिर बनाया है। आपके सहयोग से संघ के लिये बहुत बड़ी भूमि आर्य समाज के साथ ही दी हुई है। संघ की सौ से अधिक शाखायें अमेरिका में चलती हैं। आप यहाँ संगठन के अध्यक्ष हैं। आपके श्वसुर दृढ़ आर्य थे, उन्हीं ने आपको आर्य समाज की ओर प्रेरित किया। विपश्यना के प्रवर्तक गोयनका डॉ. ओम्प्रकाश जी के साथ बर्मा में आर्य समाज के कामों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। अमेरिका में बने विपश्यना भवन की भूमि का दान भी डॉ. सोनी जी ने ही किया था। डॉ. सोनी कैन्सर विशेषज्ञ हैं, अब ८० वर्ष की आयु हो गई है, अत: चिकित्सा कार्य छोड़ दिया। अधिक समय आर्य समाज के काम में लगाने का प्रयास करते हैं। आर्य समाज में डॉ. दिलीप वेदालंकार की मृत्यु के बाद योग्य विद्वान् की कमी बनी हुई है।

३ अप्रैल को प्रातराश करके डॉ. सोनी, श्रीमती सोनी के साथ आर्य समाज के लिये निकले, लगभग एक घण्टे का मार्ग है, कुछ पहले पहुँच गये थे तो एक चक्कर गुजराती मन्दिर अक्षरधाम का लगाकर आये, रविवार के कारण पर्याप्त भीड़ थी। लौटकर समाज मन्दिर पहुँचे। प्रथम यज्ञ हुआ, एक बालक और उसके पिता का साथ जन्मदिन था। विशेष आहुतियाँ दिलाकर आशीर्वाद दिया। फिर एक भजन और मेरा व्याख्यान हुआ। एक घण्टा प्रवचन और आधा घण्टा प्रश्नोत्तर हुए, सबने मिलकर भोजन किया। वहाँ से मैं पटेल जी के साथ उनके घर आया। पटेल जी का घर हवाई अड्डे के निकट है। डॉक्टर जी के घर से हवाई अड्डा बहुत दूर है और अवस्था बड़ी होने से शारीरिक श्रम अधिक सम्भव नहीं है। सायं पटेल जी के साथ शिकागो के हिन्दू मन्दिर गया। यह विशाल एवं भव्य बना हुआ है। यहाँ अधिकांश गुजराती समुदाय के लोग दिखाई दे रहे थे। आज सत्यनारायण कथा का आयोजन था। कथा के बाद

सबसे भेंट की, भोजन किया और घर पर लौटे। यहाँ एक पत्रकार श्री सीताराम पटेल मिलने आये, भारत की परिस्थिति के बारे में चर्चा की, प्रात: जाना था, वार्ता समाप्त कर विश्राम किया।

४ अप्रैल प्रात: जागरण, यात्रा की सज्जा की, श्रीमती पटेल ने भोजन तैयार करके रखा था। वे एक डाकखाने में काम करती हैं। श्री पटेल सेवानिवृत्त हैं। डॉ. सोनी जी के साथ समाज सेवा का कार्य करते हैं। गुजरात में आपके पिता विधानसभा के सदस्य थे। श्री पटेल के साथ हवाई अड्डे पहुँचा, उनका धन्यवाद किया, नमस्ते कर अन्दर गया। सुरक्षा जाँच के बाद यान में बैठा, यान यथासमय चला और यहाँ के समयानुसार सनफ्रांसिस्को ११ बजे पहुँच गया। भास्कर और सुयशा आ गये थे, उनके घर पहुँच कर स्वाध्याय व लेखन कार्य कर विश्राम किया।

५ अप्रैल को यहाँ के बाजारों में भ्रमण किया। स्वाध्याय और लेखन कार्य किया।

६ अप्रैल को अटलान्टा की यात्रा की सज्जा की। सुयशा भास्कर के साथ सैन होजे हवाई अड्डा पहुँचे, सुनसान लग रहा था। मुझे पहुँचाकर दोनों लौट गये। यान के प्रस्थान में समय था, धीरे-धीरे लोगों की संख्या बढ़ने लगी। यान के प्रस्थान तक पूरा यान भर गया। सारे सहयात्री अभारतीय थे, अत: किसी से कोई बात नहीं हो सकी।

७ अप्रैल को प्रात: सात बजे यान अटलाण्टा पहुँच गया। यहाँ के समय में अन्तर था, सनफ्रान्सिसको में सुबह ४ बजे थे। दूरभाष में कुछ खराबी आ रही थी, कोई नहीं मिला। एक गोरे युवक से सहायता ली, पहले उसकी समझ में भी कुछ नहीं आया, उसने फिर प्रयास किया और दूरभाष ठीक हुआ। विश्रुत से सम्पर्क किया, विश्रुत अपनी पत्नी और पुरोहित जी के साथ अड्डे पर पहुँच गये थे, थोड़ी देर में सब मिल गये। गाड़ी से विश्रुत के घर पहुँचकर आवश्यक कार्य सम्पन्न किये। परिवार में श्री सुभाष वेदालंकार का प्रयास फलित हो रहा है, सभी बच्चों के साथ संस्कृत बोलने का प्रयास करते हैं, बच्चे भी उत्साह से उत्तर देते हैं। इनके परिवार में विश्रुत उनकी धर्मपत्नी स्वाति और पुत्र हविष्कृत है तथा छोटे भाई विराट, पत्नी अनन्या तथा बेटा अनुभव व बेटी ऋचक्षा है। यह अतिशय प्रसन्नता की बात है। वैसे भारत में भी हमारा अंग्रेजी प्रेम उबाल खाता है, परन्तु भारतीय अमेरिका में तो अपने को गोरा ही समझते हैं, बच्चों को हिन्दी या मातृभाषा से दूर रखने में ही गौरव समझते हैं। विश्रुत के बेटे हविष्कृत ने मुझसे कहा- दादा जी, आप जब तक यहाँ रहें, मेरे साथ संस्कृत में ही बोलें। हम दोनों ने ऐसा ही किया। उसे कुछ संस्कृत के श्लोक भी स्मरण कराये। आज आर्य समाज से श्री विद्याधर शर्मा मिलने आये, वे बीकानेर के निवासी हैं, भारत की चर्चा होती रही। सायंकाल आर्य समाज भवन में सत्संग हुआ, आज का विषय था- 'संस्कारों की आवश्यकता' पश्चात् प्रश्नोत्तर हुए। भोजन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। श्री गिरीश खोसला जी को पधारना था, वे रुग्णता के कारण नहीं आ सके।

शेष भाग अगले अंक में.....

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार**, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**09110400005753O**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के रक्षार्थ समर्पित हैदराबाद यात्रा: एक अनुभव

– ब्र. सत्यव्रत

पिछले अंक का शेष भाग.......

८ मई को भोजनोपरांत बस द्वारा हम आर्ष शोध संस्थान व कन्या गुरुकुल अलियाबाद पहुँचे जहाँ आ. आनन्दप्रकाश जी व आ. नीरजा जी ने हमारा स्वागत किया। वहाँ की भव्य कलात्मक यज्ञशाला देखकर हम अति आनन्दित हुये। तत्पश्चात् वहाँ से कुछ दूरी पर स्थित बटुक विद्यालय में आर्ष पाठ्यक्रम उद्घाटन दिवस के अवसर पर आयोजित यज्ञ में हमने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। यज्ञोपरांत आचार्य सत्यजित् जी एवं डॉ. धर्मवीर जी के प्रेरक प्रवचन हुये। डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि सच्चा शिक्षक वही होता है जो हमें सोचने के लिये मजबूर कर दे। आ. सत्यजित् जी ने आर्ष शिक्षा के महत्त्व का प्रतिपादन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा आचार्या नीरजा जी के ८ वर्षीय सुपुत्र और आर्ष पाठ्यक्रम के छात्र द्वारा शुद्ध सस्वर अष्टाध्यायी का पाठ सुनाना।

आ. नीरजा जी का अपने पुत्रों को आर्ष पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षित करना हमें स्तुत्य लगा।

९ मई २०१६ को प्रात: १०.०० बजे संगोष्ठी के संयोजक डॉ. विनोत चैतन्य विद्युत अभियन्ता की अध्यक्षता मे संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र प्रारम्भ हुआ। ईश स्मरण के पश्चात् स्वयं परिचय का कार्यक्रम उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। डॉ. चैतन्य जी की टीम में डॉ. सोमा जी भाषा-विज्ञान की शोध छात्रा, सुखदा जी, बहन किशोरी जी भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान, शिमला की प्राध्यापिका डॉ. अम्बा कुलकर्णी जी आदि शामिल थे।

तदुपरांत अपने उद्बोधन में डॉ. चैतन्य जी ने भारतीय संस्कृति पर मंडरा रहे खतरों से हमें अवगत कराया और उनके निवारणार्थ हम सबको कुछ कर दिखाने का आह्वान किया। चर्चा में अपने विचार व्यक्त करते हुये डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि वैज्ञानिक लिपि देवनागरी विश्व की सर्वश्रेष्ठ लिपि है जिसकी प्रशंसा स्वर-विज्ञान विशेषज्ञ पश्चिमी विद्वानों ने भी की है। इस लिपि में जैसा बोलेंगे वैसा ही लिखेंगे और जैसा लिखते हैं वैसा ही पढ़ते हैं, जबकि रोमन लिपि के कारण अंग्रेजी शब्दों के उच्चारण में सर्वत्र अराजकता है। आपने चेतन भगत का लेख 'रोमन लिपि अपनाओ हिन्दी बचाओ' की व्यर्थता को स्पष्ट किया और कहा कि रोमन लिपि अपनाने पर हम प्राचीन साहित्य से दूर हो जायेंगे। सत्र के अन्त में सूचना दी गई कि आगे से प्रथम सत्र प्रात: ९.०० बजे से १.०० बजे तक और द्वितीय सत्र अपराह्न ३.०० बजे से ५.३० बजे तक चलेंगे।

डॉ. चैतन्य जी ने जापान में कम्प्यूटर (संगणक) तकनीक द्वारा जापानी भाषा से फ्रेंच भाषा में हुए सफल मशीनी अनुवाद की जानकारी देते हुये उससे प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने नागरीलिपि के स्वर और स्वर की मात्रा में क्या संबंध और क्या भिन्नता है-इसे स्पष्ट करने के लिये 'की' का उदाहरण देते हुये कहा कि 'ी' मात्रा 'क' में से 'अ' को हटाती और ई को जोड़ती है।

अर्थात्, मात्रा ी= अ+ई

इस पर आ. सत्यजित् जी का मन्तव्य था कि 'की' में ी की मात्रा 'अ' को हटाती नहीं अपितु व्यंजन 'क' में ई के योग को लाघव कर दर्शाती है।

द्वितीय सत्र में चैतन्य जी ने कहा कि हमें ऐसी तकनीक विकसित करनी है, जिससे सिद्धान्त (शास्त्र वचन) की हानि न हो और हमारा कार्य भी सिद्ध हो जाय। साथ ही व्यावहारिक पाणिनीय व्याकरण का पाठ्यक्रम भारतीय विद्यालयों में पढ़ाया जाना चाहिये।

अगले दिन प्रथम सत्र में लिनेक्स सिस्टम (Linex system) से कम्प्यूटर संचालन की विधि बताई गई। इसके अन्तर्गत नया फोल्डर बनाना, उसके अन्दर अपना फाइल बनाना उसका उपयोग करना और उसे सुरक्षित (Save) करना बताया गया।

द्वितीय सत्र में माननीया प्रा. अम्बा कुलकर्णी जी ने दूरभाष संस्कृत हिन्दी मशीन अनुवाद टूल के विषय में

जानकारी दी जिसके द्वारा अनुवाद और लिप्यन्तरण की क्रिया सम्पन्न की जाती है। इस प्रक्रिया में उन्होंने पाणिनीय व्याकरण के सफल उपयोग पर भी प्रकाश डाला जिसका अनुभव हमारे लिये अतिरोमाचकारी रहा। पाणिनीय व्याकरण द्वारा विश्लेषण व संश्लेषण की प्रक्रिया में प्रयोग निर्धारण, कारक निर्धारण व वाक्य रचना विषयों पर उन्होंने प्रकाश डाला। आप्टे और मोनियर विलियम रचित संस्कृत शब्दकोशों पर आधरित संस्कृत हिन्दी अनुवादक मशीन द्वारा उन्होंने पूरी प्रक्रिया का प्रायोगिक दिग्दर्शन भी कराया जो उत्साहवर्धक रहा। उन्होंने अष्टाध्यायी सिमिलेटर और क्रियापद निष्पादिका पर भी प्रकाश डाला। अगले दो दिनों तक उन्होंने इस विषय को स्पष्ट करने के लिये सैद्धान्तिक कक्षायें ली और उनके सहयोगी संजीव जी आदि ने सभी को संगणक प्रयोगशाला में लेजाकर तद्‌विषय संगणक पर प्रयोग कराकर विषय को स्पष्ट किया।

अम्बा जी ने बताया कि भाषा ध्वनि के अर्थ को बताता है जबकि लिपि ध्वनि के दृश्य संकेत को। अष्टाध्यायी के सूत्र संश्लेषण की पूरी प्रक्रिया को बताते हैं। उन्होंने बताया कि मशीन (संगणक) को क्योंकि केवल पदों का ज्ञान है, पदार्थों का नहीं, अत: वह समास का नाम अभी नहीं बता पा रहा जिस पर काम चल रहा है। अगले सत्र में उन्होंने वाल्मीकीय रामायण के श्लोकों का विश्लेषण कर उनके हिन्दी अनुवाद की प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया। इस सत्र के अन्त में डॉ. धर्मवीर जी ने भारतीय कम्पनी 'इम्फोसिस' के पूर्व अध्यक्ष नारायण मूर्ति के वित्तीय सहायता से संस्कृत शास्त्रों पर काम करने वाले अमेरिकी शेरान पोलक के षड्यंत्रों का पर्दाफाश किया। मोदी के सत्ता में आने के बाद भारत सांस्कृतिक रूप से गुलाम होने से बचा। पूर्व सरकारों ने जहाँ संस्कृत को हटाने का कार्य किया, वहीं अब मोदी जी ने संस्कृत को बढ़ाने की दिशा में कुछ पहल की है। डॉ. धर्मवीर जी की स्पष्टोक्ति ने हम सबको सोचने के लिये मजबूर किया।

अगले दिन श्री चैतन्य जी ने बताया कि व्याकरण के स्तर पर शब्द व विन्यास और वाक्य संरचना के स्तर पर भारतीय भाषाओं में काफी साम्य है-यह जानकर हर्षमिश्रित आश्चर्य हुआ। आपने कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य व भाववाच्य वाले वाक्यों की अनुवाद विधि बताई।

भारतीय संदर्भ में भाषाई दूरियाँ मिटाने के लिये साधन के रूप में आपने व्यावहारिक व्याकरण और तकनीक के उपयोग की बात बताई। उन्होंने इस प्रक्रिया को निम्नलिखित तीन स्तरों पर करने की बात कही-

१. पाणिनीय व्याकरण का प्रयोग २. जन-सहकारी मॉडल ३. कार्य को छोटे-छोटे टुकडों में बाँटकर जिम्मेदार व्यक्तियों को सौंपना। इस कार्य से होने वाले लाभों को परिगणित करते हुये आपने बताया कि इससे आम भारतीय आदमी सशक्त होगा, भाषा के कारण वह ज्ञान-विज्ञान में पीछे नहीं रहेगा व उदात्त भारतीय मूल्यों से सामान्य जन का परिचय होगा। तदुपरांत संगणक प्रयोगशाला में सबको ले जा कर तत-सम्बन्धित प्रयोग राये गये जो रोमांचक लगे। लगभग प्रतिदिन सैद्धांतिक कक्षा के बाद प्रायोगिक कक्षा भी कराई गई। अनुवाद की प्रक्रिया में प्रकरण के अनुसार शब्दों के अर्थ का निर्धारण करने की विधि बताई गई जो रुचिकर लगी। अंग्रेजी-हिन्दी टाइपिंग की विधि भी सीखायी गयी। ट्री-बैंक (Tree bank) की जानकारी देते हुये बताया गया कि वृक्ष की शाखाओं की तरह वाक्य संरचना व वाक्य-विन्यास में कारक विभक्ति पदों का एक-दूसरे से संबंध होता है जो प्रायोगिक रूप से भी बताया और कराया गया। मशीन द्वारा अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय प्रकरणानुसार व्याकरण शब्दों के सही अर्थ चुनने की प्रक्रिया बताई गई।

अगले दिनों के सत्रों में बताया गया कि मशीनी अनुवाद करते समय कृदन्त विशेषण, विशेष्य-विशेषण, कारक, विभक्ति, क्रिया विशेषण, आदि का विशेष ध्यान रखना चाहिये। एतद् विषयक प्रयोग भी कराये गये। उत्तर व दक्षिण की भाषाओं में अंतर को रेखांकित करते हुये बताया गया कि 'ने' चिह्न का प्रयोग केवल हिन्दी में होता है। साथ ही दक्षिण की भाषाओं में वाक्य का मुख्य भाग पहले आता है जबकि उत्तर की भाषाओं में प्राय: बीच में। सभी प्रतिभागियों को संगणक के 'synset' फाइल के अन्तर्गत एक शब्द की विभिन्न अर्थों की सूची में विद्यमान अशुद्धियाँ ठीक करने व अधूरे अर्थों को टाइप करने का कार्यभार सौंपा गया जो अत्यन्त रोचक लगा। साथ ही 'विभक्ति'

फाइल के अन्तर्गत विभक्ति युक्त वाक्यों के उदाहरणों को पढ़कर विभक्ति के सामान्य नियम बनाने को कहा गया जो अत्यन्त बुद्धिगम्य लगा। सैद्धान्तिक कक्षा में बताया गया कि वाक्य में वैयाकरण की दृष्टि से सबसे मुख्य क्रिया (धातु)होता है, मीमांसको की दृष्टि में तिङ् मुख्य होता और नैयायिकों के मतानुसार प्रथमा (कर्त्ता) मुख्य होता है। सभी कारकों का क्रिया के साथ सीधा संबंध होता है।

२३ मई को समापन सत्र में चैतन्य जी ने बताया कि अष्टाध्यायी में पाणिनी ने कम्प्यूटर प्रोगाम की तरह ही प्रोग्रामिंग की है-यह जानकर सबने आत्मगौरव का अनुभव किया। तदुपरांत अनुभव श्रावण व धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम को प्रारम्भ करते हुये आ. सत्यजित् जी ने कहा कि इस संगोष्ठी से ट्रिपल आई.टी. जैसी अग्रणी संस्था का परिचय गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को भी मिला, जिससे उनमें आत्म-विश्वास का स्फुरण हुआ और वे परोपकारिणी सभा की व्यवस्था का महत्त्व समझे। आपने संगोष्ठी के संयोजक और उनके सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देते हुए कहा कि सिर्फ स्तरीय भाषाविद् लोगों को जोड़ने से ही यह कार्य शुद्धतापूर्वक पूर्ण होगा। आपने कहा वेदार्थ समस्या का समाधान अभी कम्प्यूटर से नहीं हो सकेगा। तत्पश्चात् डॉ. धर्मवीर जी ने आयोजकों को धन्यवाद देते हुये कहा कि-मुखिया ठीक होता हैतो सारी व्यवस्था ठीक होती है। ऋषि उद्यान गुरुकुल की सुव्यवस्था का मल कारण आचार्य सत्यजित् जी हैं। आपने कहा कि जिसके पास ज्ञान है या ज्ञान जिसे पहले प्राप्त होता है, दुनिया में जीत उसी की होती है। देशाटन व संगोष्ठी आदि से अंदर से प्रेरणा मिलती है कि हम कर क्या सकते हैं। लक्ष्य यदि अच्छा है तो बाकी कमियों का कोई अर्थ नहीं। चैतन्य जी ने सबका आभार व्यक्त किया।

इस अनुभव के वृतान्त में प्रिय पुलकित दिलीप वेलाणी जी की चर्चा के बिना चर्चा अधूरी रहेगी। आप आर्य समाज के उद्‌भट विद्वान्, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु के दौहित्र हैं और ट्रिपल आई.टी.के अति मेधावी छात्र हैं। २३ मार्च २०१६ को आपको ट्रिपल आई.टी. के छात्रों के लिये सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार-'बेनियान पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया, जिसे जानकर हम सभी आर्य बन्धु गौरवान्वित हुये। यात्रा समाप्ति तक इनका हार्दिक सहयोग और प्रेम हम सबको भाव विभोर कर देने वाला रहा। एक दिन संगोष्ठी के सत्रावसानोपरीत 'आन्ध्रभूमि' दैनिक के सम्पादक श्री एम.वी.आर. शास्त्री जी के निमन्त्रण पर हमारे प्रधान जी कुछ ब्रह्मचारियों के साथ उनसे मिलने गये। वहाँ राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओं पर प्रधान जी के साथ उनकी गहन चर्चा के अन्तर्गत उन्होंने कहा कि वेदों व दयानन्द की शिक्षाओं में ही हमारी सभी समस्यायों का समाधान है। इसी बीच हैदराबाद निवासी पूर्व अभियंता एवं सम्प्रति इन्जिनियरिंग कॉलेज के संस्थापक आर्यसज्जन श्री सत्यानन्द रेड्डी जी अपने आर्य मित्रों के साथ हमसे मिलने आये। आप 'वेद विज्ञान वेदिका' नामक संस्था के माध्यम से 'वेदों में विभिन्न विज्ञान' विषय पर शोध पत्र व पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। आपकी संस्था का जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय से भी शोध-संबंध है- इस तथ्य को जानकर हम सभी आह्लादित हुये।

ट्रिपल आई.टी. के आर्य सज्जनों द्वारा प्रतिदिन प्रात: देवयज्ञ किया जाता है। जिसमें हम सभी श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन सम्मिलित हुये। यज्ञोपरांत पूज्य प्रधान जी के अति प्रेरक व ज्ञानवर्धक प्रवचनों से हम सब लाभान्वित हुये। रविवार के दिन अधिक संख्या में उपस्थित आर्य सज्जनों को संबोधित करते हुये आपने कहा कि मानव मात्र के लिये वैदिक धर्म ऐच्छिक नहीं अपितु अनिवार्य है, जिसका पालन करने से लाभ और न करने से हानि होती है तथा धर्म का कोई विकल्प नहीं है। पूज्य आ. सत्यजित् जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मानव जीवन की सार्थकता वेदानुसार आचरण करने में ही है। जो धर्मपूर्वक कमायेगा और दान देगा-उसमें धार्मिक गुण आयेंगे ही।

१२ मई को अति विनम्र व सेवाभावी अभियंता सौरभ जी की पत्नी अमृता जी का आचार्य द्वय की उपस्थिति में आचार्या नीरजा जी द्वारा अत्यंत श्रद्धापूर्वक सीमन्तोनयन संस्कार किया गया, जिसमें हम सभी सम्मिलित होकर आनन्दित हुये।

२१ मई रविवार को आचार्यद्वय के प्रेरक प्रवचनोपरांत महाराष्ट्र वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुयोग्य शिष्य और कम्प्यूटर वैज्ञानिक श्री डॉ. म्हात्रे के वेद और महर्षि दयानन्द

के विचारों को वैज्ञानिकों तक पहुँचाने के जीवंत अनुभव को सुनकर हम सभी भाव विह्वल हो गये।

इस यात्रा के अंतिम दो दिन स्थानीय दर्शनीय स्थलों व गुरुकुलों के भ्रमण के लिये निश्चित किये गये थे। इस क्रम में २४ मई को हम हैदाराबाद स्थित सुप्रसिद्ध चारमीनार देखने गये। शिया शासक कुली कुतुबशाह द्वारा १६ वीं शताब्दी में निर्मित इस भवन के चारों किनारों पर एक-एक अतिसुंदर नक्काशीदार मीनार बने हुये हैं।

तदुपरांत हम हैदाराबद का प्रसिद्ध १९५१ में स्थापित सालारजग संग्रहालय देखने गये जो भारत के बड़े एवं सुव्यवस्थित संग्रहालयों में से एक है। संग्रहालय में कुतुबशाही व निजामशाही राजाओं की वस्तुओं के संग्रह के अतिरिक्त पाश्चात्य यूरोपीय, मध्यपूर्व, सुदूर पूर्व के देशों तथा भारतीय मौर्यवंश से लेकर मुगल वंश तक की कलाकृत्तियों, मूर्तियों का संग्रह है। संग्रहालय स्थित म्यूजिकल घड़ी को देखकर हम बहुत आनन्दित हुये। तत्पश्चात् हम बिरला साइंस म्यूजियम 'संग्रहालय' देखने गये। जहाँ विज्ञान के अजूबों से हम रूबरू हुये। संग्रहालय स्थित अनन्त गहराई वाला कुआं देखकर हम आश्चर्य चकित रह गये। पुन: बिरला मंदिर गये।

२ जुलाई को हम प्रात: ५.०० बजे बस द्वारा हमारे सहपाठी ब्र. सोनशेखर जी के भाव भरे निमंत्रण पर शादनगर स्थित उनके गृह पर पहुँचकर उनके परिवार द्वारा आयोजित अग्निहोत्र यज्ञ में सम्मिलित हुये। आर.एस.एस. से जुडे उनके परिवार का हमारे प्रति प्रेम और सेवा का व्यवहार सदा स्मरणीय रहेगा। तदुपरांत हम गोलकुण्डा का किला देखने गये हिन्दू राजाओं द्वारा निर्मित इस किले पर १६ वीं शताब्दी में छल से यवन कुतुबशाह ने कब्जा कर लिया था। इस किले में मानव के अद्भुत प्रयास का दर्शन कर हम रोमांचित हो गये। किले की वास्तुकला की प्रमुख विशेषता संवाद प्रेपित करने में प्रतिध्वनि के उपयोग की है।

२५ मई को हम बस द्वारा आ. उदयनाचार्य द्वारा स्थापित व संचालित, ग्राम-पिचिपेड जिला मेदक स्थित निगम-नीडम (वेद गुरुकुल) गए, जहाँ गुरुकुल के आचार्य उदयनाचार्य ने हम सबका भावभरा स्वागत किया। तेलंगाना राज्य में आर्ष पाठ्यक्रम वाले गुरुकुल के सुयोग्य आचार्य और ब्रह्मचारियों से मिलकर हम सब को संतोष का अनुभव हुआ। इसके पश्चात् हम दयानन्द नगर, टी मांदापुर स्थित आर्ष वैदिक कन्या गुरुकुल गये। जहाँ की प्रधानाचार्या सुनीति जी ने हमारा स्वागत किया। आचार्या जी ने तेलंगाना में ईसाई मिशनरियों द्वारा कराये जा रहे धर्मान्तरण पर चिंता व्यक्त की और तीव्र वैदिक प्रचार कार्य करने का संकल्प लिया। तत्पश्चात् हम आर्ष गुरुकुल न्यास वड्लूर गये जहाँ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के साथ हमारे प्रधान जी का विचार-विमर्श हुआ। प्रधान जी ने स्वामी जी द्वारा आर्ष पाठ्यक्रम समाप्त कर दिये जाने पर अत्यन्त खेद व्यक्त किया। वहाँ से हम ट्रिपल आई.टी. लौट आये। शीघ्र तैयार हो सांय ६.३० बजे रेलगाड़ी से अजमेर के लिये प्रस्थान किया। इस पूरी यात्रा में आ. डॉ. धर्मवीर जी और आचार्य सत्यजित् जी हमारे सदा साथ रहे, जिनके मार्गदर्शन व सुव्यवस्था में हमें कोई कष्ट नहीं हुआ। जहाँ आचार्य जी के अद्भुत प्रबन्ध कौशल से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला वही आ. डॉ. धर्मवीर जी की अद्भुत ज्ञान चर्चा से हमारी शंकाओं का निवारण व सैद्धान्तिक ज्ञान की अभिवृद्धि हुई। अंत में सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका सहयोग हमें प्राप्त हुआ।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। *गुरुकुल*- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ जून २०१६ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री दिनेश नवाल व श्रीमती राजकुमारी नवाल, अजमेर ४. श्री किशोर काबरा, अजमेर ५. श्री लक्ष्मणप्रसाद त्रिवेदी, जूनागढ़, गुजरात ६. श्री रंजन हांडा, नई दिल्ली ७. श्रीमती तारावंती कोहली, दिल्ली ८. श्री शिवलाल, जयपुर, राज. ९. श्री चन्द्रभान शुक्ल, छतरपुर, म.प्र. १०. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ११. श्री अवनीश कपूर, दिल्ली १२. श्रीमती कमला पांडव, पटियाला, पंजाब १३. श्री शम्भुलाल साहनी, मुम्बई, महाराष्ट्र १४. डॉ. बलवन्त सिंह आर्य, बीकानेर, राज. १५. स्वास्तिकामा चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र १६. श्री राजेन्द्र सिंह, नई दिल्ली १७. श्री राजेन्द्र कुमार, महेन्द्रगढ़, हरियाणा १८. श्रीमती सूर्याकिरण आर्या, जोधपुर, राज. १९. श्रीमती कमला देवी व श्री बद्रीप्रसाद पँचोली, अजमेर २०. वैदिका काबरा, सूरत, गुजरात २१. श्री सुरेशचन्द शास्त्री, एटा, उ.प्र. २२. श्रीमती शान्ति देवी, अजमेर २३. श्री कैलाशचन्द गर्ग, जयपुर, राज. २४. श्री गोविन्दप्रसाद आर्य, गंगापुरसिटी, राज. २५. श्रीमती तारामनी व श्री विष्णुप्रकाश सोमानी, अजमेर २६. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर २७. श्री देवेन्द्र कुमार आर्य, कोटा जंक्शन, राज. २८. जस्टिस प्रीतमपाल, पंचकुला, हरियाणा।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ जून २०१६ तक)

१. विनीत चौहान, अजमेर २. सुश्री दीपमाला राजावत, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्री अनुज मिश्रा, अजमेर ५. श्री कृपाशंकर दुबे, जौनपुर, उ.प्र. ६. श्री आनन्द आर्य, जौनपुर, उ.प्र. ७. श्री शान्तिस्वरूप, जयपुर, राज. ८. श्रीमती तारावंती कोहली, दिल्ली ९. श्री प्रणव माथुर, अजमेर १०. श्री भागचन्द व श्रीमती सूरजकान्ता सोमानी, अजमेर ११. श्री मोहनचन्द, अजमेर १२. श्रीमती कमला पाण्डव, पटियाला, पंजाब १३. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी व श्रीमती कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड १४. श्री राजेन्द्र कुमार, महेन्द्रगढ़, हरियाणा १५. श्रीमती लीला बाई, अजमेर १६. श्रीमती कमला देवी व श्री बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर १७. वैदिका काबरा, सूरत, गुजरात १८. श्री हरिप्रसाद शर्मा, अजमेर १९. श्री सूर्यप्रकाश आर्य, अलवर, राज. २०. श्री टकराराम पंवार, बाडमेर, राज. २१. श्री महेश, अजमेर २२. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर २३. श्री राजेश त्यागी, अजमेर २४. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

वानप्रस्थ आश्रम के दान दाता

१. श्री बाबूलाल (मन्त्री) आर्यसमाज, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़, राज. २. श्रीमती भँवरी देवी पारीक, जयपुर, राज. ३. श्री हेमन्त कुमार गुप्ता, अजमेर ४. श्री सुभाष चन्द तापड़िया, अजमेर ५. श्रीमती ओमवती पारीक, अजमेर ६. श्री रामचन्द्र सोमानी, अजमेर ७. श्री रामनिवास तापड़िया, अजमेर ८. श्री ओमप्रकाश लड्ढा, अजमेर ९. श्री गणपत देव, कपिल देव सोमानी, अजमेर १०. श्री ओमप्रकाश सोमानी, अजमेर ११. श्रीमती उर्मिला महेश्वरी, अजमेर १२. श्री बालमुकुन्द छपेरवाल, अजमेर १३. श्री मुरलीधर छपेरवाल १४. श्रीमती शान्तिदेवी, फूलचन्द, अमृतसर, पंजाब १५. श्री प्रणव मुनि, जयपुर, राज. १६. श्री भागचन्द व श्रीमती सूरजकान्ता सोमानी, अजमेर।

सर्वांगीण विकास के लिए ऋषि उद्यान अजमेर में आर्य वीर दल शिविर का १५ से २२ मई २०१६ तक सफल संचालन

"तन-मन के विकास के लिए संस्कार शिविरों का विशेष महत्त्व रहता है। जो किशोर-युवा व्यायाम, योग व ध्यान से जुड़ जाते हैं, वे सदैव व्यसनमुक्त व स्वस्थ रहते हैं।"

उक्त विचार आर्यवीर दल जिला-अजमेर के संचालक **डॉ. विश्वास पारीक** ने आर्यवीर दल शिविर के लिये ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड में आयोजित बैठक में व्यक्त किये।

बच्चों की दिनचर्या व हानिकारक आदतों को सुधारने के लिए योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, सूर्य नमस्कार, मलखम्भ, जिमनास्टिक, परम्परागत व आधुनिक खेल सिखाये गये तथा आत्मरक्षा हेतु जूडो-कराटे, लाठी-भाला, तलवार आदि शस्त्र चलाने का अभ्यास भी शिविर में कराया गया।

नई पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए यह आवासीय शिविर विशेष महत्त्व रखता है। इस हेतु विशेष बैठक की गयी।

बैठक में परोपकारिणी सभा के मन्त्री **श्री ओममुनि, सिद्धार्थ पारीक, सुशील शर्मा, वासुदेव आर्य, प्रणव आर्य, पीयूष** आदि उपस्थित थे।

१६ मई, २०१६ आर्यवीर दल जिला अजमेर द्वारा आयोजित चरित्र एवं संस्कार निर्माण शिविर में दूसरे दिन प्रातः चार बजे समस्त आर्यवीरों ने जागरण के वेदमन्त्रों का पाठ किया, प्रातः ५ से ७ बजे तक शारीरिक व्यायाम, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, आत्मरक्षा हेतु जूडो-कराटे, व्यायाम शिक्षक **श्री सुशील शर्मा** ने सिखाया, मन को स्वस्थ रखने हेतु योगाभ्यास एवं ध्यान का सत्र जिला संचालक डॉ. विश्वास पारीक ने लिया। श्री ज्ञानेश्वर जी के नेतृत्व में आर्यवीरों ने यज्ञ किया एवं उन्होंने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप को समझा।

दोपहर बौद्धिक सत्र में **श्री जागेश्वर जी निर्मल** ने आर्य वीरों को व्यवहारभानु के अन्तर्गत यह समझाया कि मनुष्य जन्म प्राप्त होने के पश्चात् हमें यह समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में हर क्षेत्र में सभी के साथ, हर परिस्थिति में कैसा व्यवहार करना चाहिये, जिससे वह निरन्तर प्रगति कर सके।

सायंकालीन सत्र में प्रत्येक आर्यवीर को आत्मरक्षा हेतु लाठी के अभ्यास **श्री कमलेश पुरोहित, आशीष कुमावत एवं प्रणव प्रजापति** ने सिखाये। शिविर में मध्यप्रदेश, झारखण्ड, राजस्थान, गुजरात, बिहार आदि राज्यों से लगभग १२५ आर्यवीरों ने भाग लिया।

सभी आर्यवीरों ने सर्वांग सुन्दर व्यायाम व्यायाम शिक्षक जीवनलाल आर्यवीर के मार्गदर्शन में किया। सुशील शर्मा ने जूडो-कराटे का अभ्यास कराया एवं सूर्य नमस्कार व योगासन कराएँ।

प्रातःकाल यज्ञ के पूर्व **आचार्य कर्मवीर जी** के सानिध्य में १२५ आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण किया। आचार्य जी ने आर्यवीरों को बताया कि इसे धारण करना हमारी संस्कृति है। यह हमें हमारे तीनों ऋण-पितृ, ऋषि एवं देव ऋण की हमेशा याद दिलाता है। अतः हमें हर पल इन ऋणों से उऋण होने हेतु कर्म करने चाहिए।

अगले सत्र में ज.ला.ने. चिकित्सालय में कार्यरत वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक **डॉ. दिनेश बेदी** ने सभी आर्यवीरों को बताया कि हम अपनी आँखों को किस प्रकार सुरक्षित रख सकते हैं। बच्चों, वयस्कों में आँख से सम्बन्धित होने वाली बीमारियों के बारे में बताया। इनसे कैसे बचे और हो जाये तो तुरन्त चिकित्सक से सम्पर्क करने हेतु कहा। मधुमेह नामक बीमारी से भी आँख अस्वस्थ हो जाती है। अतः इससे भी बचें। नेत्रदान हम मरणोपरान्त अवश्य करें। जीते जी रक्तदान एवं मरणोपरान्त नेत्रदान अवश्य करें। यदि हम सभी इसका संकल्प ले तो निःसन्देह ही कोई नेत्रहीन हमारे समाज में नहीं होगा। आँखों को स्वस्थ रखने हेतु आर्यवीरों को अनेक व्यायाम भी बताये। अनेक आर्यवीरों की आँखों की जाँच भी उन्होंने की एवं आवश्यक औषधियाँ

भी उनको दी गयी। आर्यवीरों द्वारा किए गए अनेक प्रश्नों के सहज रूप में उत्तर डॉ. दिनेश बेदी जी ने दिए व उनकी शंका का समाधान किया।

१८ मई,२०१६ स्वच्छता अभियान के तहत आर्यवीरों ने श्रमदान किया।

आर्यवीर दल शिविर का चौथा दिन प्रात: वैदिक मंत्रोच्चारण के पश्चात् निवृत्त होकर सभी आर्य वीर प्रात: ५.०० बजे मैदान में पहुँचे। सभी आर्यवीरों को सर्वांगसुन्दर व्यायाम व सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार संगीत पर करवाया।

प्रात:कालीन बौद्धिक कक्षा में आचार्य कर्मवीर जी ने अनुशासन की विशेषताएँ बताते हुए चार विशेषताएँ बताई। १. मुस्कराते हुए आज्ञा पालन करना २. नि:संकोच कठिन परिश्रम करना ३. झूठ न बोलना, बहाने न बनाना ४. समय का पालन करना।

श्री वासुदेव जी ने वैदिक धर्म पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वैदिक धर्म को मानने वाले को आर्य कहते हैं। आर्य श्रेष्ठ, दयालु, परोपकारी व्यक्ति को आर्य कहते हैं।

अगले सत्र में **डॉ. प्रशान्त शर्मा** (कैंसर रोग विशेषज्ञ) मित्तल अस्पताल, अजमेर ने बताया कि संक्रमण से फैलने वाले रोग एवं असंक्रमित रोग, सभी भोजन, वायु, ध्वनि से होते हैं। दूषित भोजन, बासी भोजन नहीं करें। कैंसर कैसे होता है इससे बचने के उपाय तम्बाकू, शराब, सिगरेट आदि का सेवन नहीं करें।

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत ऋषि उद्यान में श्रमदान व स्वच्छता का कार्य किया गया।

१९ मई, २०१६ को आर्यवीरों ने रस्से, मल्लखम्ब का अभ्यास किया। आर्यवीर दल शिविर के पाँचवें दिन प्रात:कालीन मंत्र के बाद नियमित दिनचर्या में आर्यवीरों ने शारीरिक अभ्यास किया। सभी आर्यवीरों ने व्यायाम संगीत पर किया। प्रात:कालीन बौद्धिक कक्षा में वार्ड नं ०३ के पार्षद **श्री ज्ञान जी सारस्वत** ने अपने उद्‌बोधन में कहा- जो कर्मठ व्यक्ति होता है, वो अपना कार्य अधूरा नहीं छोड़ता, वह तो उस कार्य को पूरा करके ही दम लेता है। लहरों से डरकर के नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। हमको सभी कार्यों को स्वच्छता से करना चाहिए, तभी हम जीवन में आगे बढ़ सकेंगे। हमें अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी चाहिए और अपने देश के अन्दर सफाई रखनी चाहिए, हमें इधर-उधर कचरा नहीं करना चाहिए।

अगली कड़ी में आर्य विद्वान **श्री सत्येन्द्रसिंह जी** ने कहा कि हमें बहादुर बनना चाहिए और बहादुर बनने के लिए हम जैसा खाना खाते हैं, वैसे ही हमें व्यायाम करना चाहिए। हमें प्रतिदिन सुबह-शाम संध्या हवन करना चाहिए। हमें सुबह जल्दी उठ करके माता-पिता को पैर छू के प्रणाम करना चाहिए। हमारी सबसे कीमती अनमोल चीज समय है, तो हमें समय बर्बाद नहीं करना चाहिए, समय का सदुपयोग करना चाहिए।

सॉयकालीन शारीरिक सत्र में व्यायाम शिक्षक **अभिषेक कुमावत** ने रस्से मल्लखम्ब का अभ्यास कराया तथा रात्रिकालीन सत्र में भी आर्यवीरों को महापुरुषों के जीवन चरित्र की लघु फिल्म दिखाई गई। इसमें गुरुकुल के उपाचार्य **सत्येन्द्र जी, वासुदेव जी, किशनसिंह जी** ने प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम सम्पन्न किया।

सन्ध्या व यज्ञ के बाद प्रात:कालीन बौद्धिक सत्र में **श्री मुमुक्षमुनि जी** ने कहा- यदि हम बुरे कर्म करेंगे, तो हमें बुरा फल मिलेगा और हम अच्छे कर्म करेंगे, तो हमें अच्छा फल मिलेगा, इसलिए हमें सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए। बड़ों का तथा माता-पिता, गुरु की आज्ञा माननी चाहिए और हमें कभी गलत काम नहीं करना चाहिए।

इसके साथ ही **डॉ. प्रियंका शर्मा** (आयुर्वेद) जे.एल.एन. ने बताया कि आयुर्वेद का उद्देश्य शरीर को स्वस्थ रखना या स्वास्थ्य की रक्षा करना है। ऋतु छ: प्रकार की होती है। वर्षा ऋतु, हेमन्त ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, शीत ऋतु, बसन्त ऋतु, शरद ऋतु आँखों की रोशनी के लिए काली मिर्च को घी में सेक कर, उसे पीसना चाहिए, फिर उसे खाना चाहिए। प्रत्येक आर्यवीर को ऋतु अनुकूल भोजन करना चाहिए, उन्होंने मौसमी बीमारियों के बारे में जानकारी दी, स्वास्थ्य सम्बन्धी पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया। प्रात: कालीन बेला में नशामुक्ति जाग्रति रैली निकाली गयी। रैली ऋषि उद्यान से भिनाय कोठी तक गयी।

कार्यक्रम में **श्री शरद गोमावत, डॉ. प्रियंका शर्मा,** परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष **श्री सुभाष नवाल, श्री**

वासुदेव जी सहित आर्यवीरों के अभिभावक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सम्पूर्ण आठ दिवसीय शिविर का सफल संचालन जिला संचालक श्री विश्वास पारीक ने किया। मुख्य शिक्षक श्री सुशील शर्मा के नेतृत्व में प्रतिभागियों को शारीरिक प्रशिक्षण दिया गया, जिनमें **जीवन लाल**-उदयपुर, **कमलेश पुरोहित, आशीष, अक्षय, अभिषेक, पीयूष, सुनील प्रणव व कार्तिक** आदि सभी शिक्षक टीम को सभा मन्त्री श्री ओममुनि ने सम्मानित किया तथा आगामी शिविर के लिए और अधिक कुशलता से कार्य करने की प्रेरणा दी। शिविर में अनेक वर्गों में परस्पर प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई। लेखन गायन, खेलकूद एवं अस्त्र-शस्त्र के पुरस्कार वितरण कर प्रोत्साहित किया गया। अन्त में ध्वज गान के पश्चात् ध्वजा अवरोहण करके शिविर समाप्ति की घोषणा की गई।

आर्य वीरांगना दल का प्रान्तीय शिविर: एक विवरण

आर्य वीर दल एवं परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में आयोजित, आर्य वीरांगनाओं हेतु ''चरित्र निर्माण तथा जूडो-कराटे प्रशिक्षण शिविर'' ३० मई से ५ जून २०१६ तक ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग में आयोजित किया गया।

आर्यवीर दल, अजमेर के जिला संचालक, श्री विश्वास पारिक ने बताया कि यह शिविर पूर्णत: आवासीय था, जिसमें आर्य वीरांगनाओं के स्वास्थ्य रक्षा के लिए योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, सूर्य नमस्कार, जिमनास्टिक का प्रतिदिन अभ्यास कराया गया।

शिविर संचालिका श्रीमती रीना चौधरी ने बताया कि बालिकाओं को आत्मरक्षा के लिए जूडो-कराटे, लाठी, भाला, तलवार, शूटिंग आदि शस्त्रों के संचालन व संकट कालीन परिस्थिति में बचाव के तरीकों का अभ्यास करवाया गया।

उक्त शिविर में सम्पूर्ण राजस्थान के साथ ही महाराष्ट्र व अन्य राज्यों से भी वीरांगनाओं ने भाग लिया।

शिविर का शुभारम्भ करते हुए परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर उन्होंनें आर्य समाज के छठे नियम का हवाला देते हुए कहा कि बालिकाओं को ऐसे उपयोगी शिविरों के माध्यम से अपनी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करनी चाहिए ताकि वे संसार का उपकार कर सकें।

श्रीमती किरण मेहरा जी ने भारतीय वीरांगनाओं के गुणों को अपने व्यक्तित्व में समाहित करने के लिए अनुशासनमय जीवन जीने पर बल दिया। परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री ओम मुनि जी ने समाज में बढ़ते वैचारिक प्रदूषण से बचने व महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने की सीख दी।

शिविर संचालिका रीना चौधरी ने शिविर में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि प्रात: ४:०० बजे से रात्रि १० बजे तक कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे जिनमें प्राणायाम, योग, जीवन कौशल, ईश्वर भक्ति, किशोरावस्था की समस्याएँ, आत्मरक्षा के गुर, देशभक्ति गीत, निबंध लेखन, चित्रकला एवं संध्या व यज्ञ आदि शामिल हैं। रात्रि को रोजाना देशभक्ति फिल्म दिखाई जाएगी एवं फिल्म पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

मानव शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से कमजोर होता जा रहा है। मानवीय मूल्य खोते जा रहे हैं, इसीलिए मनुष्य ईर्ष्या, तनाव और विविध विकारों से घिरा हुआ है। मानव को मानव बनाए रखने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की महती आवश्यकता है, क्योंकि आध्यात्मिक शिक्षा ही सबसे बड़ी शिक्षा है।

प्रात: बौद्धिक सत्र में आचार्य सत्यजित् जी ने ईश्वर क्या है? इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'जो सृष्टि की रचना से पूर्व भी विद्यमान था, सृष्टि विनाश के पश्चात् भी विद्यमान रहे, वही ईश्वर है।' ईश्वर के विषय में वीरांगनाओं की शंकाओं का समाधान भी किया गया।

दोपहर को कनिष्ठ वर्ग के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' एवं वरिष्ठ वर्ग के लिए 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

८० बालिकाओं ने प्रात:काल हवन में भाग लिया तथा यज्ञोपवीत धारण किया। आत्म सुरक्षा हेतु प्रात: सायं जूडो कराटे, लाठी एवं तलवारबाजी का अभ्यास करवाया

गया।

सायंकालीन सत्र में सामाजिक कार्यकर्ता मंजू तोषनीवाल ने परिवार सेवा संस्थान के सहयोग से बालिकाओं के किशोर जीवन से सबंधित विभिन्न समस्याओं का निराकरण डॉक्यूमेंट्री फिल्म के प्रदर्शन द्वारा प्रस्तुत किया। योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, लाठी संचालन का अभ्यास प्रात:-सायं करवाया गया।

ऋषि उद्यान में चल रहे वीरांगना संस्कार निर्माण शिविर में शुक्रवार को वीरांगनाओं ने रैली के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश दिया। 'बीड़ी पीकर खाँस रहा है, मौत के आगे नाच रहा है,' 'नशा नाश की जड़ है' आदि नारे लगाते हुए रैली ऋषि उद्यान से रवाना होकर महावीर सर्किल होते हुए आगरा गेट स्थित भिनाय कोठी पहुँची। भिनाय कोठी में डॉ. श्रीगोपाल बाहेती ने रैली को संबोधित करते हुए बेटियों को सशक्त बनने हेतु प्रेरित किया।

दोपहर को बौद्धिक सत्र में आचार्य सोमदेव जी ने बताया कि संवेदनाएँ ही कर्त्तव्य पालन के लिए प्रेरित करती हैं। देशभक्ति का जज्बा सभी में होना चाहिए। सायंकालीन सत्र में बहन कंचन आर्या ने धर्म के लक्षण तथा आत्म तत्त्व का विवेचन किया। प्रात:-सायं जूडो-कराटे, तलवारबाजी, एवं लाठी चलाने का अभ्यास करवाया गया।

ऋषि उद्यान में आयोजित सप्त दिवसीय आर्य वीरांगना संस्कार निर्माण शिविर में गुरुवार को चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कनिष्ठ वर्ग के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' एवं वरिष्ठ वर्ग के लिए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' विषय पर वीरांगनाओं ने कैनवास पर बहुत सुन्दर चित्र उकेरे। कनिष्ठ वर्ग में क्रमश: महक बोराना, पलक गौड़, खुशी राठौड़ एवं वरिष्ठ वर्ग में पलक पँवार, नितेश शेखावत, गजल जैन ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किये। एक सप्ताह का यह शिविर सफलता पूर्वक पूर्ण हुआ।

सम्पादक के नाम पत्र

स्वामी विवेकानन्द जी की ईसा भक्ति

सम्पादक जी, विचारशील पाठक तथा जातिभक्त दर्दील बन्धुओं से मेरा निवेदन है कि स्वामी विवेकानन्द जी की कृति Christ-The messenger के अगले वचनों का आशय सब हिन्दुओं को खोलकर बतायें। स्वामी विवेकानन्द जी की असीम ईसा भक्ति से 'घर वापसी' का मिशन कहाँ तक व कैसे पूरा होगा?

Let us, therefore, find god not only in Jesus of Nazareth, but in all the great Ones

In a sense you are all prophets, every one of you is a prophet.

Our salutation go to all the past prophets whose teachings and lives we have inherited.

मित्रो! स्वामी विवेकानन्द जी सब पैगम्बरों को नमन करते हुए ईसा के स्तुतिगान में भाव विभोर होकर सब के पैगम्बर होने की घोषणा कर रहे हैं। इस स्थिति में कोई श्रीमान् भागवत जी की घर वापसी की घोषणाओं को किन अर्थों में लें?

यह उलझन विश्वहिन्दू परिषद् अथवा संघ परिवार ही सुलझा सकते हैं।

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे। -महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

संस्था - समाचार

०१ से १५ जून २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रातःकाल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से सबंधित विशेष मन्त्रों से आहूति भी दिलवाये जाते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

प्रातःकालीन प्रवचन के क्रम में ऋग्वेद के हिरण्यगर्भ सूक्त की व्याख्या करते हुए **डॉ० धर्मवीर जी** ने बताया कि सांसारिक और पारमार्थिक दोनों ही प्रकार के सब छोटे-बड़े सुख परमेश्वर की उपासना से प्राप्त होते हैं, क्योंकि वही दोनों प्रकार के सुखों का स्वामी है। जीवन की प्रत्येक छोटी-बड़ी समस्या में मनुष्य सबसे पहले परमात्मा को याद करता है। जो मनुष्य सांसारिक भोगों में लिप्त रहता है वह सोचता है कि ईश्वर की उपासना के बिना ही सब सुख मिल रहा है तो उपासना की क्या आवश्यकता है? परमात्मा की उपासना और ज्ञान से ऊपर, मध्य तथा नीचे के अर्थात् तीनों प्रकार के बन्धन छूट जाते हैं और सब ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं। मनुष्य जब परमेश्वर के सामर्थ्य और उसके नियमों को जान लेता है तब वह बुरे कर्मों को छोड़ देता है जिससे बन्धन होता है। नास्तिक मनुष्य कर्म और कर्मफल व्यवस्था को न जानकर बुरे कर्मों में लिप्त रहता है। कर्मों का फल तत्काल नहीं मिलने से अज्ञानी मनुष्य निंदनीय कर्म करना नहीं छोड़ता। बुरे काम का बुरा फल और अच्छे काम का अच्छा फल तत्काल भले ही न मिले किन्तु मिलना निश्चित है। केवल इच्छा करने से किसी पदार्थ की प्राप्ति असम्भव है। ईमानदार को भी बिना पुरुषार्थ के कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। पुरुषार्थ का, फल की प्राप्ति से सतत सम्बन्ध है। यह सारा संसार उस परमेश्वर को बता रहा है और हमें जानना है क्योंकि इससे बाहर हम कोई काम नहीं करते और इस संसार को जाने बिना व्यवहार कर नहीं सकते। संसार में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों मनुष्य की नित्य आवश्यकता है। इनमें से किसी एक के बिना हमारा जीवन पूर्ण रूप से सुखी नहीं हो सकता। किन्तु अधिकांश मनुष्य अर्थ और काम में ही लिप्त रहते हैं। धर्म और मोक्ष की प्राप्ति में ध्यान नहीं देते। धर्म को पूर्ण रूप से जीवन से निकाला नहीं जा सकता, कम-ज्यादा होने से सुख-दुख कम अधिक होता है किन्तु उससे अलग नहीं हुआ जा सकता। धर्म ऐच्छिक नहीं, अनिवार्य है। इसी प्रकार मोक्ष अर्थात् बन्धनों से मुक्ति सभी चाहते हैं। जीवन में किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध कोई नहीं चाहता। बन्धनों का अनुभव होने से ही मुक्ति की इच्छा होती है। कोई मनुष्य कितना भी बुरा कर्म करता है किन्तु बुरे नाम से पुकारने पर वह दुखी होता है। ऐसे ही कोई भी मनुष्य अधर्म करके भी अधर्मी कहलाने में दुख का अनुभव करता है इसी से समझना चाहिये कि अच्छा कर्म करना, धर्म का पालन करना प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता है। धर्म किसी भी मनुष्य के लिए त्याज्य नहीं हो सकता। मनुष्य इन्द्रियों द्वारा अधिक से अधिक सुख प्राप्त करना चाहता है किन्तु इन्द्रियों से सुख प्राप्ति की एक सीमा होती है उससे आगे जाने पर इन्द्रियों के बल का नाश होने

लगता है।

योग शिविर में प्रातःकालीन यज्ञ के पश्चात् ध्यान उपासना की चर्चा करते हुए आपने कहा कि हम वैदिक धर्मियों को ईश्वर की उपासना वैसे ही करना चाहिये जैसा वेद में बताया गया है। ईश्वर की उपासना दिन-प्रतिदिन करना चाहिये। उपासना का दूसरा नाम संध्या भी है, जिसके दो अर्थ हैं, पहला-सम्यक् ध्यान करना और दूसरा दिन-रात की संधि वेला अर्थात् प्रातः-सायंकाल। दिन में श्रम करना और रात में विश्राम करना स्वास्थ्य के अनुकूल है। इसलिये दिन रात की संधि वेला प्रातःकाल और सायंकाल उपासना के लिये सर्वोत्तम समय है। जैसे शरीर के लिए भोजन और मस्तिष्क के लिए ज्ञान प्रतिदिन आवश्यक है वैसे ही आत्मा के लिए ईश्वर की उपासना भी आवश्यक है। उपासना में शरीर का शांत होना, नम्रतापूर्वक हाथ जोड़ना और आँखें बन्द होना स्वाभाविक है। उपासना नकल से नहीं किन्तु ज्ञान प्राप्त कर, सोच विचार कर, बुद्धिपूर्वक करना चाहिये तभी सफल होता है। उपासना के समय में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अतिरिक्त और किसी विषय का चिन्तन नहीं करना चाहिये। परमात्मा के लिए भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल सब वर्तमान ही है क्योंकि वह शाश्वत है। हम मनुष्यों के लिए भूत, भविष्य व वर्तमान काल अलग-अलग है। ईश्वर हर क्षण हमारे निकट है लेकिन हम उससे दूर रहते हैं क्योंकि हर क्षण हम उसका ध्यान नहीं करते हैं। ज्ञान प्राप्ति और कर्म करते समय हम उससे दूर रहते हैं। वेद-शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय उपासना में विशेष सहायक होता है। तीन अनादि सत्ताएँ हैं-ईश्वर, जीव और प्रकृति। इन तीनों का अपना-अपना महत्त्व है। ईश्वर तथा जीव दोनों चेतन हैं, प्रकृति जड़ है। ईश्वर सुन्दर है और जीव भी सुन्दर है। दोनों साथ रहते हैं, ईश्वर सब जीवों का मित्र है वह सदा जीवों का ध्यान रखता है। दोनों में पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, राजा-प्रजा, उपास्य-उपासक, सेव्य-सेवक, निर्माता-भोक्ता, फलदाता-कर्मकर्ता आदि सम्बन्ध है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है इसलिये सब प्रकार के जड़ और चेतन पदार्थों में सदा व्याप्त रहता है। प्रकृति निर्मित जड़ शरीर में आत्मा और परमात्मा दोनों ही रहते हैं। जैसे घर में पिता-पुत्र दोनों रहते हैं वैसे ही इस संसार में ईश्वर और जीव दोनों साथ-साथ विद्यमान रहते हैं। यह सम्पूर्ण विश्व उससे आच्छादित है। ईश्वर इस संसार को जीवों के भोग और मुक्ति के लिए ही बनाता है। जैसे माता अपने संतानों के लिये सुन्दर पकवान बनाती है वैसे ही परमेश्वर इस संसार में सब जीवों के भोग के लिये अनेक प्रकार के अन्न, फल, औषधि, वनस्पति आदि बनाता है। जीव अल्प सामर्थ्य वाला, एकदेशी, अल्पज्ञ, कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है। वह इस संसार के आकर्षण में अपने कर्मों के अनुसार बंधता रहता है। न्यायकारी ईश्वर सदा मुक्त रहते हुए जीवों के कर्मों को देखता है तथा नियमानुसार किये हुए कर्मों का समय पर उचित फल देता है। वह मनीषी है इसलिये हमारे मन में उठने वाली अच्छी-बुरी सब बातों को जानता है। जो जीवात्मा संसार के भोगों में लिप्त रहता है वह जन्म-मृत्यु के बन्धन में पड़ा रहता है। जो दूसरे के पदार्थों का लालच न करते हुए अपने ही पदार्थों का भोग करता है और ज्ञानवान् होकर अन्य जीवों के कल्याण के लिए श्रेष्ठ कर्म करता है वह मुक्ति प्राप्त करता है।

प्रातःकालीन सत्संग में 'असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः। ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के च आत्महनो जनाः।।' यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के तीसरे मन्त्र की व्याख्या करते हुए **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि महापुरुष तो इस मनुष्य जीवन को जीते हैं किन्तु साधारण मनुष्य जीवन में अनेक बार मरते हैं। महापुरुष अपने आत्मा की अनुकूलता प्रियता से व्यवहार करते हुए बुरे कर्मों से हमेशा अलग रहते हैं और दूसरों के सुख-दुःख को अपने हृदय में अनुभव करते हैं। साधारण मनुष्य जीने की कला नहीं जानता और अपने आत्मा के विरुद्ध आचरण करते हुए बार-बार आत्महत्या करता है। युद्ध भूमि में योद्धा अपने विरोधी से हारने पर अपमानित होकर अत्यन्त दुःखी होता है, वह मृत्यु ही है। धार्मिक सज्जन मनुष्यों का अपमान करना आत्महत्या है। हमारे देश में श्री कृष्ण जैसे महापुरुष पर माखन चोरी, रास लीला आदि व्यभिचार का आरोप लगाने वाले इस देश के बहुसंख्यक आत्महत्या कर रहे हैं। अपने ही मुँह से अपनी बड़ाई करना, डींगे मारना

आत्महत्या है। रेल से कटकर मरना, जहर खाकर मरना, आग लगाकर मरना, फंदे से लटककर मरना आत्महत्या नहीं, शरीर की हत्या है। आत्मा के विरुद्ध आचरण करना ही आत्महत्या है। बीते हुए का शोक करना, शिष्टाचार के विरुद्ध दो व्यक्तियों के बीच में घुसपैठ कर बोलना, मांसाहार करना, शराब आदि नशापान करना, जुआं खेलना, अपने से दुर्बल प्राणियों को सताना, बेईमानी, छल-कपट करना, ठगना आदि आत्महत्या है। इन्द्रियों के विषयों में रमण करना आत्महत्या है। इस प्रकार के मनुष्य अगले जन्म में अज्ञान अन्धकार युक्त लोकों में जन्म लेते हैं। वेद-शास्त्रों से विरुद्ध जप, तप आदि करना भी आत्महत्या ही है। जो व्यक्ति आत्मरक्षा करने वाला होता है वह वेद और ईश्वर की आज्ञानुसार जीवनयापन करता है। इससे विपरीत वेद की शिक्षाओं को न मानना ही आत्महत्या है।

प्रातःकालीन प्रवचन में **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय के मन्त्रों की व्याख्या करते हैं। समसामयिक चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हम प्रतिदिन शान्तिपाठ करके ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि पृथ्वी से लेकर अन्तरिक्ष, द्युलोक पर्यन्त सब पदार्थ शान्तिदायक हो। जल, औषधि, वनस्पति, संसार के सभी देव और शान्ति भी शान्तिदायक हो। अशान्ति अपने मन से भी होता है वह भी न हो। शान्ति तभी हो सकती है जब हम अपने कर्त्तव्यों का पालन ईमानदारी से करें। दूसरे के पदार्थों पर गिद्ध दृष्टि न रखें अर्थात् लालच न करें। वेद के अनुसार संसार के सभी प्राणियों को हम मित्रभाव से देखें और सब प्राणी भी हमें मित्र दृष्टि से देखें तभी शान्ति हो सकती है। प्रेम की भाषा संसार के अधिकांश प्राणी समझते हैं। प्रकृति के साधनों का दुरुपयोग करने से मौसम और जलवायु परिवर्तन हो रहा है इस कारण अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि अनेक स्थानों में लगातार होते रहते हैं। कुछ राष्ट्र अपने को शक्तिशाली बनाये रखने के लिए दूसरे देशों के सुख शान्ति में बाधा डालते रहते हैं। अमेरिका एक ऐसा देश है जो अस्त्र-शस्त्र बेचने और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने को न्यायाधीश सिद्ध करने के लिए संसार के अन्य देशों को आपस में लड़वाता रहता है। कमजोर देशों में आतंकवाद, माओवाद, नक्सलवाद, देशद्रोह को बढ़ावा देता है। अनेक प्रकार के साम, दाम, दण्ड, भेद आदि से छोटे-छोटे देशों में हमेशा युद्ध की स्थिति बनाये रखता है। अपने पड़ोसी देशों से युद्ध करना भी विश्व में अशान्ति का कारण है। इस्लाम और ईसाईयत ऐसी विचारधारा है जो दूसरे मतवालों को सुखपूर्वक जीने नहीं देते। वर्तमान में संसार का सबसे अधिक क्रूर आतंकवादी संगठन आईएसआईएस कट्टर इस्लामिक विचारधारा की उपज है। जैसे कुरान और बाइबिल में हिंसक विचार भरे हुए हैं वैसे किसी अन्य मत के ग्रन्थों में नहीं है। चुनाव की वर्तमान प्रणाली भी राष्ट्र में अशान्ति का कारण है जो नेताओं और उसके समर्थकों को विरोधी दलों से लड़वाता है। चुनाव प्रक्रिया के दौरान लड़ाई-झगड़े, हत्यायें होना आदि समाज और राष्ट्र में अशांति का मुख्य कारण है। वैदिक धर्म और संस्कृति के सब देशों में प्रचार-प्रचार से ही विश्व शान्ति सम्भव है।

आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर के अंतिम दिन आर्य वीरांगनाओं को संबोधित करते हुए प्रातःकालीन प्रवचन में आपने कहा कि यह शिविर विद्यार्थियों के ग्रीष्मकालीन अवकाश का सर्वोत्तम उपयोग है। शिविर में जो शारीरिक और बौद्धिक शिक्षा प्राप्त हुई है उसे याद रखें और अगले शिविर में भी उत्साहपूर्वक भाग लेवें। यह शिविर बालिकाओं के व्यक्तित्व निर्माण में विशेष सहायक है। यहाँ शिविर में सीखे गये संध्या-उपासना, यज्ञ आदि को घर पर भी नियमित करें। ईश्वर भक्ति और देशभक्ति का पाठ घर जाकर अपने साथियों को भी सिखायें। विद्यार्थियों को इस प्रकार के अवसर जब भी मिले उसका समुचित लाभ लेवें। शिविर में लाठी, भाला, ढाल-तलवार चलाना, जूडो-कराटे और अन्य युद्ध कला जो सीखे हैं वह अपने और समाज के दुर्बल लोगों की रक्षा के लिये है। अपने शारीरिक और बौद्धिक सामर्थ्य को परिवार और राष्ट्र के हित में लगायें। किसी को अकारण न सतावें। विद्यार्थी जीवनकाल, विद्या अध्ययन और निर्माण का समय होता है। इन्द्रियों को वश में रखते हुए शरीर, बुद्धि और आत्मा के बल को बढ़ाते हुए विद्या प्राप्ति में ही पूर्ण सामर्थ्य लगाना चाहिये। मनुष्य जन्म पाकर विद्या प्राप्त नहीं किया तो जीवन में अनेक प्रकार के कष्ट आते हैं। अभाव, अन्याय और अज्ञान जन्य

सब दु:खों से बचने का एकमात्र साधन विद्या ही है। सफलता के दो ही साधन है-पहला ज्ञान और दूसरा प्रयत्न। बिना ज्ञान के प्रयत्न विशेष लाभदायक नहीं होता है। अनपढ़ किसान, मजदूर अपने लिए रोटी, कपड़ा और घर प्राप्त कर लेता है किन्तु यश, धन और सुख के अन्य साधनों की प्राप्ति विद्या और तप के बिना नहीं हो सकता। ज्ञान के द्वारा ही संसार का वैभव और मोक्ष प्राप्त होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विद्या का महत्त्व है। मृत्यु पर्यन्त विद्या बढ़ाते रहना चाहिये। विद्या प्राप्त कर विवाद करने में अपने समय और सामर्थ्य को व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहिये। उद्योग, व्यापार, व्यवसाय तथा सेवा कार्य विद्या के बिना ठीक प्रकार नहीं हो सकता है। विद्या से मनुष्य का जीवन अलंकृत होता है। आलस्य और दुर्गुणों को अपने से सदा दूर रखना चाहिये।

प्रात: कालीन सत्संग में सभा मंत्री **श्री ओममुनि जी** ने कहा कि मनुष्य उचित रीति से प्रयास करता है तो उसे सफलता अवश्य मिलती है। संसार को आर्य बनाने के लिए पहले स्वयं को, अपने परिवार को आर्य बनाना बहुत आवश्यक है। घर में दैनिक यज्ञ, वेदपाठ, स्वाध्याय और समय-समय पर विभिन्न संस्कार होते रहने से पड़ोसियों को भी उससे परिचित कराया जा सकता है। जिससे वे भी इन श्रेष्ठ कर्मों को करने के लिए प्रेरित हो सकें। दैनिक यज्ञ करने से घर का वातावरण स्वास्थ्य के अनुकूल रहता है। गृहस्थ लोगों को व्यापार, व्यवसाय, नौकरी आदि में भी धर्म के अनुकूल ही व्यवहार करना चाहिये। वैदिक सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता से ही आर्य समाज आगे बढ़ेगा, सिद्धान्तों के विपरीत चलने से संगठन कमजोर होता है। गुरुकुल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को तब तक निरन्तर पढ़ते रहना चाहिये जब तक प्रचार की पूर्ण योग्यता प्राप्त न हो जाए।

आर्य वीरांगना दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न- ४ जून प्रात:काल आर्य वीरांगनाओं द्वारा नगर में जुलुस निकालकर विभिन्न समस्याओं के प्रति जागरुकता का संदेश दिया गया। ५ जून रविवार शाम ६ बजे भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जिला प्रमुख श्रीमती वन्दना जी, अजमेर के प्रथम नागरिक श्री धर्मेन्द्र गहलोत जी, परोपकारिणी सभा के विशिष्ट सहयोगी शारदा परिवार के उद्योगपति श्री मनोज शारदा जी, सभा प्रधान डॉ० धर्मवीर जी, मंत्री श्री ओममुनि जी, श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य जी, शिविरार्थियों के अभिभावक गण एवं सभी आश्रमवासी उपस्थित थे। एक सप्ताह तक शिविर में सिखाये गये आत्मरक्षा कौशल की विभिन्न विधाओं का वीरांगनाओं ने प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में लाठी, भाला, ढाल-तलवार चलाना, जूडो-कराटे, संगीत के साथ सूर्य नमस्कार- भूमि नमस्कार, योग के विभिन्न आसन, मानव पुल, मानव स्तूप, व्यायाम आदि का प्रदर्शन हुआ। डॉ० धर्मवीर जी ने वीरांगनाओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जब भी इस प्रकार के शिविर का आयोजन हो सभी वीरांगनायें उसमें सहर्ष भाग लेकर शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक क्षमता का समग्र विकास करें। जो दिनचर्या यहाँ शिविर में सिखाई गई है उसे पूरा जीवन भर चलाये उससे कई बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त होगी। संसार में शरीर और आत्मा ही सबसे अधिक मूल्यवान पदार्थ है इसकी रक्षा के लिए नियमित दिनचर्या और व्यायाम, ध्यान आदि प्रतिदिन करें। दूर-दूर के क्षेत्रों से शिविरार्थी यहाँ आते हैं इसलिये यह शिविर बालिकाओं में सामाजिक सद्भावना को बढ़ाने का भी साधन है। यह संस्था इस प्रकार के शिविर आयोजित करके सभी बालक-बालिकाओं के चरित्र निर्माण कर उनके सर्वांगीण विकास के लिये प्रतिबद्ध है। सभा मंत्री श्री ओममुनि जी ने कहा कि वर्तमान में जो स्त्रियों को शिक्षा, देश-देशान्तर की यात्रा, शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण पद और विभिन्न कला कौशल सीखने का जो अधिकार मिला है वह महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज की ही देन है। बौद्धिक कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यवहारभानु पर आधारित साक्षात्कार एवं कविता पाठ हुआ। श्रेष्ठ वीरांगनाओं और प्रशिक्षकों को विभिन्न पुरस्कार प्रदान किये गये। ध्वज अवतरण और राष्ट्र गीत के पश्चात् यह कार्यक्रम उत्साह पूर्वक सम्पन्न हो गया।

ग्रीष्मकालीन योग शिविर प्रारम्भ-१२ जून रविवार से १९ जून रविवार तक एक सप्ताह चलने वाले इस शिविर में देश के विभिन्न राज्यों से आए हुए २५० से अधिक स्त्री-पुरुष भाग ले रहे हैं। प्रथम दिन सभी

शिविरार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति मौसम के अनुसार सतर्क रहने, भोजन-आवास व्यवस्था, सामान की सुरक्षा तथा शिविर के सम्बन्ध में अन्य आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये जिससे सभी को इस शिविर का पूर्णलाभ हो सके। इस शिविर में आसन, प्राणायाम, सूक्ष्म व्यायाम के साथ ही विभिन्न सत्रों में योगदर्शन एवं अन्य दर्शनों पर व्याख्यान होंगे। डा. धर्मवीर जी, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य कर्मवीर जी, आचार्य सत्येन्द्र जी एवं स्वामी मुक्तानन्द जी अलग-अलग सत्रों में शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया।

विशिष्ट व्यक्तित्व- श्री दिनेश नवाल जी के वैवाहिक वर्षगांठ पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर घर परिवार की चर्चा करते हुए डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि घर गृहिणी से होता है। घर में गृहिणी न हो या गृहिणी योग्य न हो तो घर, घर नहीं होता है। प्रवास में रहकर जो अधिक याद आता है वह घर है। घर वह है जिसमें सब एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। घर परिवार में आने वाली समस्याओं और समाधानों का वर्णन हमारे यहाँ प्राचीन वेद-शास्त्रों में उपलब्ध है। पंच महायज्ञ ही घर परिवार की सभी समस्याओं का समाधान है। सभी सम्प्रदायों में घर परिवार की व्यवस्था और उससे सम्बन्धित कठिनाई एक जैसी होती है। पति-पत्नी, पिता-पुत्र, सास-बहु आदि रिश्ते हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई आदि सभी मतानुयायी परिवारों में प्रेमपूर्वक रहने पर ही स्थायी रूप से सुखदायक होते हैं। सभी परिवारों, सामाजिक और व्यावसायिक संस्थाओं में सेवा, सम्मान, सहयोग से ही सुख, शांति, समृद्धि होती है।

*** डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

२१ जून २०१६ एन. आई.टी. कुरुक्षेत्र में योग पर व्याख्यान।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

२८-३० जून २०१६ श्री महेश चन्द्र शर्मा जी के घर अथर्ववेद पारायण यज्ञ।

***आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

२०-२५ जून संत निर्भय नाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय में युवा निर्माण शिविर में प्रशिक्षक।

***आचार्य सत्यप्रिय जी, महर्षि दयानन्द उद्यान (गुरुकुल आश्रम जमानी, इटारसी) का प्रचार कार्यक्रम:-**

(क) ११ मई २०१६ को सारणी बैतूल में श्री सुनील जी वहोल के घर पर पारिवारिक सत्संग।

(ख) १२-१३ मई २०१६ छिन्दवाड़ा में जन सम्पर्क एवं गुरुकुल सोनाखार के वार्षिकोत्सव में भाग लिया।

(ग) १५-२२ मई २०१६ परतवाड़ा जिला-अमरावती (महाराष्ट्र) में आर्यवीर दल के शिविर में।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जिज्ञासा समाधान - ११४

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- आचार्य सोमदेव जी, सादर नमस्ते! आजकल आर्य समाज में कई नए-नए संगठन बन गए हैं, जो अपनी नई-नई परम्पराएँ चला रहे हैं और नए-नए सिद्धान्त भी बता रहे हैं। इसी प्रकार एक यज्ञ के बारे में सुना, जिसका नाम स्वराज यज्ञ रख रखा है। मेरी जिज्ञासा यह है कि क्या वेद, शास्त्रों और स्वामी दयानन्द के अनुसार इस प्रकार के स्वराज यज्ञ करने का कोई विधान है? अगर है तो इसे कौन कर सकता है, इसके करने की विधि क्या होगी? कितने समय के अंतराल पर इसे करना चाहिए? क्या इतिहास में भी कहीं इस प्रकार के यज्ञ का वर्णन आता है? इस प्रकार के यज्ञ करने से स्वराज-प्राप्ति हो जाती है? और इस यज्ञ का लाभ क्या होगा? कृपा करके विस्तार से बताएँ।

- यतीन्द आर्य, मंत्री आर्यसमाज, बालसमंद, जिला हिसार, हरियाणा।

समाधान- महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य व्यक्तिगत व समाज की उन्नति करना रखा था। महर्षि की इच्छा थी कि ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, देश-देशान्तर में आर्य समाज हों और वे समाज की उन्नति का कार्य करें। आर्य समाज व अन्य मत वालों में मौलिक अन्तर यह है कि उन्हें ईश्वर गौण दिखता है, व्यक्ति मुख्य, किन्तु आर्य समाज में ऐसा नहीं है। आर्य समाज की मान्यता वेद पर टिकी है। यहाँ व्यक्ति पूजा गौण व ईश्वर पूजा मुख्य है, यहाँ व्यक्ति की विचारधारा गौण और वेद की विचारधारा मुख्य है। इसी को आधार बनाकर महर्षि दयानन्द ने अपने विषय में कहा था कि यदि मेरी बात भी वेद के विपरीत हो तो उसको कदापि मत मानना, उसको वेद के अनुकूल ठीक कर लेना। यह कथन महर्षि की वेदनिष्ठा व ईश्वर के प्रति समर्पण और अत्यन्त सरलता का द्योतक है।

महर्षि के इस कथन से अनेक लोगों ने अनुचित लाभ उठाया अथवा यूँ कहें कि अपनी मनमर्जी का काम करना आरम्भ किया। ऋषि की भावना थी कि आर्य समाज रूपी संगठन सुदृढ़ हो कर कार्य करे, सभी आर्य एक होकर कार्य करें, किन्तु दुर्भाग्य है कि आर्य समाज में भी अपनी मनमर्जी के संगठन बने, अपने स्वतन्त्र संगठन बने, जिन संगठनों ने इस आर्य समाज रूपी विशाल संगठन को हानि ही पहुँचाई है, जो संगठन एक होकर बड़ा कार्य कर सकता है, वह टुकड़ों में बँटकर कैसे बड़े कार्य को कर सकता है?

आपने जो कहा कि नये-नये संगठन बन गए हैं, अपनी-अपनी मान्यताएँ व सिद्धान्त गढ़ लिए सो वर्तमान में दिख ही रहा है। कई लोग स्वघोषित स्वंभू विद्वान् बनकर महर्षि व आर्य समाज के नाम पर अपना संगठन बनाकर अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने का प्रयोजन सिद्ध करने में लगे हैं। अपना नया ही सिद्धांत लाकर आर्यों पर थोपते हैं और उनको भ्रमित करते हैं। एक नई बात फैलाई जा रही है कि जीवात्मा साकार है। इस बात को कहकर यह पता नहीं चल रहा कि ये स्वयंभू अपनी कौन-सी विद्वत्ता सिद्ध करना चाहते हैं? अस्तु, इसके लिए यहाँ तो नहीं, किन्तु फिर कभी लेख लिखेंगे, जिसमें महर्षि के द्वारा दिये गए प्रमाणों से सिद्ध होगा कि जीवात्मा साकार नहीं, अपितु महर्षि की मान्यतानुसार निराकार है। हाँ, हो सकता है, इन नये अवतारों का आत्मा साकार हो....।

आपकी जिज्ञासा है कि इन परम्परा वादियों ने स्वराज यज्ञ नामक यज्ञ की खोज कर ली, इनको कहाँ से ये उपलब्धि हुई है? महर्षि दयानन्द व अन्य ऋषि वा इस विषय के आधिकारिक विद्वान् श्रद्धेय मान्यवर युधिष्ठिर मीमांसक जी आदि को तो स्वराज यज्ञ का पता नहीं लगा। हो सकता है, इन तत्त्ववेत्ताओं को पता लगा गया हो।

महर्षि दयानन्द ने अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध यज्ञों को स्वीकार किया है। इन यज्ञों के अन्दर राजसूय यज्ञ व वाजपेय यज्ञ का वर्णन मिलता है। ये यज्ञ स्वराज की कामना से किये जाते हैं। स्वराज का तात्पर्य वहाँ

''स्वयं राजत इतिह स्वराट्। स्वोपपदाद् राजतेः

क्रपि स्वराट्। स्वराजो भवः स्वराज्यम्''

अर्थात् स्वयं प्रकाशित होने वाला 'स्वराट्' उसका भात्र स्वराज्य। शास्त्र में कथन आता है

''राजाराजसूयेन स्वराज्यकामो यजेत''

स्वयं प्रकाशित होने की कामना वाला राजा राजसूय के द्वारा यजन करे। इस वाक्य में राजसूय यज्ञ का कथन है, न कि स्वराज्य यज्ञ का। जो व्यक्ति प्रकरण व शास्त्र के अभिप्राय को नहीं जानता, वह एक शब्द देखकर अपनी बुद्धि से कल्पना कर लेता है। वेद मन्त्र में जहाँ कहीं स्वराज्य शब्द आया अथवा कहीं और यह शब्द आया, उसको देख अपनी कल्पना की पुष्टि व्यक्ति करता रहता है।

जो स्वराज्य अर्थात् अपने-आपको अर्थात् राजा अपने को सम्राट रूप में प्रकाशित करने के लिए राजसूय यज्ञ करता है। स्वराज का जैसा अर्थ आजकल करते हैं कि ''अपना राज्य'' वह नहीं है, अपितु जो ऊपर दिया है, वह है। इस राजसूय यज्ञ को कोई भी करने लग जाये, ऐसा कदापि नहीं है। इस यज्ञ को राजा ही कर सकता है, राजा के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता। राजा भी वह जो कम से कम तीन पीढ़ियों से परम्परा से राजा हो, तभी वह इस यज्ञ का अधिकारी हो सकता है।

इस यज्ञ को करने की विधि विस्तृत है, इसको कराने वाले सोलह ऋत्विज् होते हैं, सत्रहवाँ यज्ञमान होता है। इस स्वराज्य की कामना वाले राजसूय यज्ञ में विशेष यज्ञशाला का निर्माण किया जाता है, अग्नि को अरणी से उत्पन्न करते हैं। तीनों अग्नियों के स्थान का आकार अलग-अलग होता है। इस राजसूय यज्ञ में अनेक प्रकार की स्वतन्त्र इष्टियाँ होती हैं। इस यज्ञ के पात्र विशेष होते हैं, कुछ पात्रों के चित्र महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में दिये हैं। इस यज्ञ की विधि को विस्तार से जानने के लिए महा महोपाध्याय पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी द्वारा लिखित ''श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय'' पुस्तक पढ़ें।

इस यज्ञ का वर्णन महाभारत में मिलता है। महाराज युधिष्ठिर जब इन्द्रप्रस्थ के राजा बने, तब स्वराज्य अर्थात् अपने-आपको प्रकाशित करने के लिए तथा दृढ़ता पूर्वक चक्रवर्ती राजा बनने के लिए उन्होंने इस यज्ञ को किया था। यह यज्ञ राजा अपने जीवन काल में एक बार ही करता है और उसके जीवित रहते उसके कुल का कोई अन्य इस यज्ञ को नहीं कर सकता।

इस प्रकार के यज्ञ को करने के लिए अनेक उपकरणों की आवश्यकता होती है। उन उपकरणों के केवल नाम यहाँ लिख रहे हैं १. जुहू-यह पलास वृक्ष की होती है। अग्रभाग हथेली के बराबर चौड़ा, छः अंगुल खोदा हुआ, हंसमुख सदृश नाली से युक्त और पीछे का भाग दण्डाकार होता है। इसकी पूरी लम्बाई बाहुमात्र होती है। दण्डे के अन्तिम छोर से कुछ पूर्व नीचे की ओर सहारे के लिए टेक होती है, जिससे जुहू सीधी रखी जा सके और उसमें डाला हुआ घृत गिर न जाये। जुहू से आहुतियाँ दी जाती हैं।

२. उपभृत्-यह अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष की होती है। इसका आकार और परिमाण जुहू के समान होता है।

३. ध्रुवा-यह विकंकत वृक्ष की होती है। यह भी जुहू के समान होती है।

४. अग्निहोत्रहवणी-यह भी विकंकत वृक्ष की होती है और जुहू के सदृश है। इससे अग्निहोत्र किया जाता है।

५. श्रुव, ६. कूर्च, ७. वज्र ८. उलूखल, ९. मुसल, १०. शूर्प, ११. कृष्णाजिन, १२. दृषद्-उपल, १३. इडापात्री, १४. आसन, १५. योक्त्र, १६. पुरोडाश पात्री, १७. शृतावदान, १८. प्राशित्र हरण, १९. षडवत्त, २०. अन्तर्धान कट, २१. उपवेश, २२. रज्जु २३. शङ्कु २४. पूर्णपात्र, २५. प्रणीता पात्र, २६. आज्यस्थाली, २७. चरूस्थाली, २८. अन्वाहार्यपात्र, २९. अभ्रि, ३०. अरणी, ३१. चात्र, ३२. प्राक्षणी, ३३. पिष्टपात्री, ३४. शम्या, ३५. ओवली, ३६. नेत्री, ३७. इध्म, ३८. परिधि, ३९. सामिधेनी-समित् ४०. समीक्षण, ४१. मदन्तीपात्र, ४२. मेक्षण, ४३. पिष्टलेप पात्र, ४४. फलीकरण पात्र, ४५. शकट (गाड़ी), ४६. कपाल, ४७. कुशा, ४८. व्रीहि वा यव, ४९. आज्य आदि। ये इतने सारे उपकरण राजसूय आदि यज्ञों में काम आते हैं। इन सबका वर्णन पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने 'श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय' पुस्तक में किया है। इन तथाकथित स्वराज यज्ञ करने वालों को इसकी विधि, समय, उपकरण तथा इसे कौन कर सकता है-इत्यादि ज्ञान मुझे नहीं लगता कि इनको होगा। नाम सुन लिया स्वराज यज्ञ और जहाँ कहीं वेद मन्त्र

में स्वराज शब्द आया, उसको देख शुरू हो गये होंगे, जबकि स्वराज नाम का कोई यज्ञ है ही नहीं। हाँ, स्वराज्य की कामना से राजसूय यज्ञ व वाजपेय यज्ञ का विधान तो है, जिनका ऊपर वर्णन किया है।

जिस स्वराज्य यज्ञ के विषय में आपने पूछा है, इस प्रकार के यज्ञ से तो स्वराज की प्राप्ति होने वाली है नहीं। स्वराज की प्राप्ति यज्ञ से नहीं, इसकी प्राप्ति तो बल से होती है, नीति से होती है, संगठन से होती है, हवन करने मात्र से नहीं होती। यदि इससे ही यह प्राप्ति होती तो सेना, गुप्तचर विभाग, न्याय पालिका आदि को छोड़ यह यज्ञ ही कर लिया जाये। हाँ, स्वराज्य की प्राप्ति जो शास्त्र में कही है, वह प्राप्ति राजसूय यज्ञ करने से अवश्य होती है, क्योंकि इसको करने वाला समर्थ राजा होता है, जिसका एक सुदृढ़ राज्य होता है, वह स्वराज्य-चक्रवर्ती राज्य की प्राप्ति के लिए राजसूय यज्ञ करता है तो उसको यह उपलब्धि होती है, इसका उदाहरण महाभारत में है, जिस यज्ञ के करने से महाराजा युधिष्ठिर चक्रवर्ती सम्राट् हो गये थे।

अधिक विस्तार न करते हुए अन्त में यही कहूँगा कि जो अपने पूछा, इसको करने वाले आधा अधूरा ज्ञान रखने वाले होते हैं, ऐसे लोग शास्त्र को देखते नहीं और किसी का भी पढ़ा-सुना लेकर प्रवृत्त हो जाते हैं। आर्य समाज के लिए हितकर यही है कि अपनी-अपनी मनमर्जी न चलाकर संगठित हों तथा अपनी कार्य प्रणाली व व्यवहार में एक रूपता लायें कि जिससे ऋषियों का गौरव बढ़े और समस्त प्राणी मात्र का कल्याण हो। अस्तु!

- सोमदेव, ऋषिउद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०**

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३७

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्व भेजजो देवानां दूत ईपसे।।

हम वायु को प्राण कहते हैं। वायु के साथ प्राण शब्द का प्रयोग प्रायः देखा जाता है, वे प्राण वायु। वायु तो बिना प्राण के भी हो सकता है। वायु में प्राणप्रद तत्व हो तभी वायु, प्राण वायु होता है, प्राण को बढ़ाने वाले वायु की प्रार्थना की गई है। वायु शुद्ध पवित्र होना चाहिए। वायु को योगवाह कहा गया है। जैसे पदार्थों से वायु का संयोग होता है, वायु वैसा ही हो जाता है। मन्त्र में आने वाले वायु को श्वास के रूप में अन्दर जाने वाली वायु को भेषज का वहन करने वाला कहा गया है। निकलने वाले शरीर से बाहर जाने वाले वायु को रपः पाप अशुद्धियों को ले जाने वाला कहा है। इस प्रकार वायु एक माध्यम है, प्राण को प्राप्त कराने का और अशुद्धि मलिनता को दूर निकालने का।

वायु प्राकृतिक रूप से प्राणशक्ति से भरपूर होता है, जब हम खुले में श्वास लेते हैं, हमारे अंग का विस्तार होता है, शरीर के अंग खुलते हैं। इनमें गति करने का सामर्थ्य आ जाता है, उत्साह, प्रसन्नता आती है। जब प्रकृति के स्वच्छ वातावरण में मनुष्य जाता है, तो उसको उल्लास का अनुभव होता है। प्रकृति में जल और सूर्य की किरणें वायु को हर समय शुद्ध करती हैं। सूर्य के प्रकाश से वायु के अन्दर विद्यमान कृमि नष्ट हो जाते हैं। जल के संसर्ग से वायु उसके अन्दर की उष्णता और अशुद्धि को छोड़ देता है।

चिकित्सा विज्ञानियों का मत है कि कार्बन डाई ऑक्साइड गैस से युक्त वायु जब जल के संसर्ग में आती है, तो उसमें रासायनिक परिवर्तन होकर वायु की विषाक्तता कम हो जाती है। नीचे की गैस को जल ग्रहण करता है तथा जो गैस ऊपर की ओर जाती है, उससे वातावरण में उष्णता बढ़कर वनस्पतियों को पुष्ट करती है। इसी प्रकार हवन करते समय जो-जो पदार्थ हवन कुण्ड में डाले जाते हैं, उनको अग्नि विखण्डित कर सूक्ष्म कर देता है, जिससे हवन में डाली गई, वस्तु का प्रसार वायु मण्डल में दूर तक हो जाता है तथा उसका सामर्थ्य भी अधिक होता है। वायु को जहाँ सूर्य और जल शुद्ध करते हैं, वहीं हवन के माध्यम से अग्नि भी वायु की अशुद्धि को दूर करता है। विष कणों को रोगाणुओं को नष्ट करने की शक्ति अग्नि में ही होती है। अग्नि में भेदक गुण होता है, जिससे वस्तु कणों को भेदकर, उससे ऊर्जा को उत्पन्न करता है। इस प्रकार हवन द्वारा शुद्ध की गई वायु विश्व भेषज हो जाती है। जिस भी प्रकार की औषध अग्नि में डालेंगे, उसी गुण की वायु, उस रोग से मुक्त करने वाली बन जायेगी।

हवन में डाले जाने वाले पदार्थों में घृत भी विषनाशक है, अग्नि में रोगाणुओं को बड़ी संख्या में नष्ट करता है। हवन सामग्री में कपूर गूगल भी रोग कृमियों को नष्ट करता है। यज्ञ की सुगन्ध और धूम शरीर के सीधे सम्पर्क में आकर शरीर के कोषों में से अशुद्धि को नष्ट कर उनमें ऊर्जा का संचार करते हैं। रक्त में हवन के धूम से सक्रियता बढ़ती है, जिससे रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता की शरीर में वृद्धि होती है, जिस प्रकार गूगल रोग कृमियों का नाश करता है, उसी प्रकार गिलोय, चिरायता, मधु आदि पदार्थ यज्ञ में डालने से रक्त शोधन होता है। मुनक्का, काजू, किशमिश आदि यज्ञ में डालने से पौष्टिकता आती है, शरीर में बल बढ़ता है।

इसलिये मन्त्र में कहा गया है कि यह वायु आता हुआ बल की वृद्धि करता है और जाता हुआ रोग को नष्ट करता है।

मन्त्र में इसी बात को बताने के लिये वायु के विशेषण के रूप में उसे विश्व भेषज कहा है। हमें जैसे रोगों की चिकित्सा करनी हो, उसी प्रकार की औषध यज्ञ की सामग्री में मिलानी चाहिए। मन्त्र में वायु के लिये देवों का दूत शब्द का प्रयोग किया गया है, जैसे दूत स्वामी के सन्देश को दूर तक, दूसरे तक पहुँचाता है, उसी प्रकार वायु रोग नाशक सामर्थ्य को दूर तक पहुँचाता है। अतः दूतईय से कहा गया है कि जैसे देवताओं के दूत गतिशील होते हैं, उसी प्रकार वायु भी दिव्य गुणों का संचार मनुष्य में तीव्रता से करता है।

इस मन्त्र से हमें बोध होता है कि औषध का शीघ्र लाभ प्राप्त करने के लिये औषध को यज्ञ में डालना चाहिए। वायु को रोग विशेष के अनुसार औषध गुणों से युक्त करना उचित है तथा सामान्य रूप में पर्यावरण की शुद्धि के लिये यज्ञ में वायु शोधक पदार्थों का उपयोग करना चाहिए, जिससे स्वस्थ व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक बना रहे।

क्रमशः ....

में शोभायात्रा में १५१ वृक्षों की पौध लेकर महिलाएँ चल रहीं थीं और सैकड़ों स्त्री-पुरुष, बालवृन्द उद्घोष लगाते हुए चल रहे थे। स्वामी वेदानन्द, पं. उदयराज आर्य, आर्य संस्कार शाला गुधनी की बेटियाँ शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। उ.प्र. प्रान्तीय आर्य वीर दल के महामन्त्री आचार्य धर्मवीर व प्रशान्त आर्य के निर्देशन में ३ जून से आर्यवीर दल गुधनी का प्रशिक्षण शिविर लगाया गया व व्यायाम प्रदर्शन किया गया। पौधारोपण के साथ-साथ कई घरों में तुलसी के पौधों व अनेक औषधि के वृक्ष महिलाओं को दिए गए। पूर्णाहुति ११ जून को १५० किलो गौ घृत व ऋतु अनुकूल साकल्य से होम किया गया।

वैवाहिक

६. वधू चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- ३० वर्ष, कद- ५ फुट ७ इंच, शिक्षा- बी.ए.एम.एस. डॉक्टर, निजी नर्सिंग होम संचालक उ.प्र. निवासी युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क-** ०८४४९८६१६१६ **ई-मेल-** dr.amitmajumdar01@gmail.com

चुनाव समाचार

७. आर्यसमाज सैक्टर-१४, सोनीपत, हरि. के चुनाव में **प्रधान-** श्री ईश्वर दयाल शर्मा, **मन्त्री-** श्री युधिष्ठिर गुगलानी, **कोषाध्यक्ष-** श्री अशोक आर्य को चुना गया।

८. आर्यसमाज मगरा पूँजला, जोधपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान-** श्री ब्रह्मसिंह आर्य, **मन्त्री-** श्री जयसिंह भाटी, **कोषाध्यक्ष-** श्री महेश गहलोत को चुना गया।

९. आर्यसमाज नीमड़ीवाली, जि. भिवानी, हरि. के चुनाव में **प्रधान-** श्री राकेश आर्य, **मन्त्री-** श्री सूरजभान, **कोषाध्यक्ष-** श्री सुखपाल नोहरा को चुना गया।

१०. आर्यसमाज फेफाना, तह. नोहर, जि. हनुमानगढ़, राज. के चुनाव में **प्रधान-** श्री पृथ्वीसिंह आर्य, **मन्त्री-** श्री इन्द्राज सिंह, **कोषाध्यक्ष-** श्री ओमप्रकाश को चुना गया।

११. आर्यसमाज रामनगर, गुड़गाँव, हरि. के चुनाव में **प्रधान-** श्री ओमप्रकाश चुटानी, **मन्त्री-** श्री राधाकृष्ण सोलंकी, **कोषाध्यक्ष-** श्री भगवानदास मनचन्दा को चुना गया।

१२. आर्यसमाज शहर बड़ा बाजार, सोनीपत, हरि. के चुनाव में **प्रधान-** श्री सुभाष चाँदना, **मन्त्री-** श्री प्रवीण आर्य, **कोषाध्यक्ष-** श्री दीपक तलवार को चुना गया।

१३. आर्यसमाज सैक्टर-९, पंचकूला के चुनाव में **प्रधान-** श्री धर्मवीर बत्रा, **मन्त्राणी-** श्रीमती कमला भाटीवाल, **कोषाध्यक्ष-** श्री अश्विनी मोंगा को चुना गया।

शोक समाचार

१४. परबतसर क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री भूराराम आर्य-बड़ू, राज. के सुपुत्र **श्री कुलदीपसिंह** की मृत्यु दुर्घटना में ३२ वर्ष की आयु में दि. २७ मई २०१६ को हो गई। शान्ति यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सोमानन्द जी व श्री हेमाराम आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया। परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

आगामी ऋषि मेला

४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

को ऋषि उद्यान में होगा

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

आर्यजगत् के समाचार

१. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १४ से १७ जुलाई- आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का २६वाँ वार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १४ से १७ जुलाई २०१६ को ऑर्लैंडो फ्लोरिडा, अमेरिका में आयोजित किया जाएगा। इस सम्मेलन का विषय, भविष्य और युवाओं को ध्यान में रखते हुए 'युवा पीढ़ियों में आर्य समाज के मूल्यों का पुनर्जागरण' रखा गया है। लक्ष्य यह है कि आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए, युवा वर्ग और युवा माता-पिता, दोनों को जागृत किया जाए, उनको वैदिक सिद्धान्तों की महत्ता बताई जाए और उनकी नेतृत्व क्षमता विकसित की जाए, जिससे कि वे सब आर्य समाज के पुनर्जागरण के पुरोधा बन सकें।

इस सम्मेलन में देश-विदेश के ख्याति प्राप्त विद्वान्, मनीषी और प्रबुद्ध श्रोता भाग लेंगे। विद्वानों की सूची में स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. धर्मवीर जी-अजमेर, आचार्य ज्ञानेश्वर, डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. सुभाष वेदालंकार, डॉ. बलवीर आचार्य, स्वामी सम्पूर्णानन्द, डॉ. देवबाला रामनाथन, डॉ. सूर्यनारायण नन्दा, पं. धर्मपाल शास्त्री, आचार्य धनञ्जय, प्रो. श्रीमती जया तनेजा, आचार्य दर्शनानन्द इत्यादि कई विद्वान् व आर्य संस्थाओं के अधिकारी पधारेंगे। इस सम्मेलन में विद्वानों, अधिकारियों और कार्यकर्त्ताओं का अद्भुत संगम है। इसमें कई सत्रों का आयोजन किया जायेगा।

पंजीकरण हेतु वेबसाईट - *www.aryasamaj.com/ams*

ई-मेल - विश्रुत आर्य (निर्वाच्य प्रधान) - *vishrut@aryasamaj.com*

भुवनेश खोसला (महामन्त्री) - *bhuvnesh@aryasamaj.com*

''!९२२३०५ ॥,()

२. आवश्यकता- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. में २ रसोइयाँ, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क तथा संस्कृत संस्थान के मानदेय पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है। **सम्पर्क सूत्र- ०९९९७४३७९९०, ०९४११४८१६२४**

३. प्रवेश प्रारम्भ- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. में प्रवेश ०१ जुलाई २०१६ से प्रारम्भ हो रहे हैं। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र एवं कम्प्यूटर आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएँ उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। प्रवेश के लिए छात्र का ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। छात्रों को उत्तम संस्कार हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या-हवन एवं यौगिक क्रियाएँ कराई जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास में सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र- ०९९९७४३७९९०, ०९४११४८१६२४**

४. उत्सव सम्पन्न- १४ जून २०१६ को गंगनहर के सुरम्य तट पर स्थित गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, टीकरी, मेरठ में गंगा दशहरा का पर्व अतीव उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। ब्रह्मचारियों के बौद्धिक कार्यक्रमों एवं भजनोपदेशकों के सुमधुर भजनों का रसास्वादन प्राप्त किया। कार्यक्रम के अन्त में स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने आशीर्वचन प्रदान किये। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. वाचस्पति मिश्र ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज गुधनी का १०२वाँ वार्षिकोत्सव विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। दि. २ से १२ जून २०१६ तक चलने वाले इस 'यज्ञ महोत्सव-२०१६' नाम से प्रतिवर्ष होने वाले उत्सव के प्रचारार्थ पूरे जिले बदायूँ में ५०० बैनर व सौ से अधिक गाँवों-शहरों में दीवारों पर उत्कृष्ट नारे व कार्यक्रम की सूचनार्थ वाल पेन्टिंग कराई गई। बिसौली, बिल्सी, इस्लामनगर, कछला, मुजरिया, बदायूँ, वजीरगंज में हर चौराहे, तिराहे पर बड़े-बड़े हॉर्डिंग लगवाए गए। कार्यक्रम

आर्य वीर दल शिविर की झलकियाँ

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक   प्रेषण : ३० जून, २०१६   ३९५९/५९

आर्य वीर दल शिविर की झलकियाँ

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में